जून 2024
₹ 20

R.N.I. No. 68832/97

देश में बदलाव की राजनीति चल रही है और समाजवादी पार्टी के युवा कार्यकर्ताओं को चाहिए कि वे देश में परिवर्तन की चल रही इस राजनीति को कामयाब बनाएं। मुझे उम्मीद है कि युवा इसे सफल बनाएंगे। आम लोगों को समाजवादी पार्टी से बहुत उम्मीदें हैं। लोग जो आशा करते हैं, उन आशाओं को पूरा करने की कोशिश करना समाजवादियों का दायित्व है।

मुलायम सिंह यादव
संस्थापक, समाजवादी पार्टी

समाजवादी बुलेटिन

जून 2024
वर्ष 25 | संख्या 08

प्रिय पाठकों,

आपको बधाई एवं हृदय तल से आभार। आपकी प्रिय पत्रिका समाजवादी बुलेटिन अपने रजत जयंती वर्ष में प्रवेश कर चुकी है। आप सभी के प्यार और उत्साहवर्धन की बदौलत यह संभव हो पाया। समाजवादी बुलेटिन के ढाई दशक के सफर में इसके नए कलेवर को आपने खूब सराहा। हम भरोसा दिलाते हैं कि वैचारिक स्तर पर आपको समृद्ध करने का हमारा प्रयास सतत जारी रहेगा। कृपया अपना स्नेह यूं ही बनाए रखें।

धन्यवाद

प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक

प्रोफेसर रामगोपाल यादव

☎ 0522 - 2235454

samajwadibulletin19@gmail.com

bulletinsamajwadi@gmail.com

Mob:- 9598909095

/samajwadiparty

समाजवादी पार्टी के लिए

19, विक्रमादित्य मार्ग, लखनऊ से प्रकाशित

अवध पब्लिशिंग हाउस, 8 पान दरीबा, लखनऊ से मुद्रित

R.N.I. No. 68832/97

अंदर

YOUNG MINDS ON THE RISE 19

06 कवर स्टोरी **छा गए अखिलेश**

'बहुजन समाज' की नई श्रेणी है PDA 44

उत्तर प्रदेश की जनता और समाजवादी पार्टी ने उन लोगों को करारा जवाब दे दिया है जो यह मानने लगे थे कि यह प्रदेश पूरी तरह से सांप्रदायिक हो चुका है। 2024 के चुनाव परिणामों ने साबित कर दिया है कि सांप्रदायिकता से लड़ने में समाजवादी सबसे आगे रहेंगे।

18 वीं लोकसभा में सपा के नवनिर्वाचित सदस्य 16

अयोध्या में भी सपा की जय, भाजपा परास्त 30

अखिलेश की लंबी लकीर

निशाने पर लगा तीर

समाजवादी पार्टी के स्थापना काल के बाद से अब तक लोकसभा की सर्वाधिक 37 सीटें जीतने का कमाल यूं ही नहीं हो गया बल्कि इसके पीछे समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव की सटीक रणनीति और प्रत्याशी चयन में सूझबूझ रही। उन्होंने इस चुनाव में यह भी साबित कर दिया कि वह सिर्फ कहते नहीं बल्कि जो कहते हैं-करके भी दिखाते हैं।

चुनाव से पहले ही प्रत्याशी चयन कर उन्होंने ऐसी लंबी लकीर खींची जिसे चुनाव में काटना या छोटा करना भाजपा के बस में नहीं रहा और पहले चरण से ही उसे शिकस्त मिलते चली गई।

यह श्री अखिलेश यादव की सटीक रणनीति का ही नतीजा रहा कि समाजवादी पार्टी देश की तीसरी बड़ी पार्टी बनकर उभरी और श्री अखिलेश यादव भी राष्ट्रीय राजनीति के फलक पर चमक उठे।

PDA यानी पिछड़ा, दलित व अल्पसंख्यक का नारा देने वाले श्री अखिलेश यादव ने चुनाव से एक साल पहले ही तय कर लिया था कि वह इस फार्मूले को जमीनी हकीकत बनाएंगे। जब वह PDA का नारा दे रहे थे तो विरोधियों को लगता था कि यह सिर्फ नारा है लेकिनश्री अखिलेश यादव ने इसके जरिए यूपी को जीतने का फार्मूला तय कर लिया था।

उन्होंने इस चुनाव में PDA समाज से सर्वाधिक सीटों पर प्रत्याशी बनाकर यूपी में एक बड़ा संदेश दे दिया। प्रत्याशी चयन पर गौर करें तो इसमें अगड़े भी दिखेंगे, पिछड़े भी और दलित समाज का भी चेहरा दिखाई देगा। चार अल्पसंख्यकों को भी सिर्फ टिकट नहीं बल्कि संसद तक पहुंचाकर श्री अखिलेश यादव ने उनकी भी नुमाइंदगी का ख्याल रखा। ब्राह्मण चेहरे के तौर पर प्रत्याशी चयन में बलिया से सनातन पांडेय थे तो धौरहरा से आनंद भदौरिया, घोसी से राजीव राय, मुजफ्फरनगर से हरेंद्र मलिक का नाम भी यह बताने के लिए काफी है कि पिछड़ों को ज्यादा नुमाइंदगी देते हुए श्री अखिलेश यादव ने अगड़ों का भी साथ नहीं छोड़ा और उन्हें भी सपा की ओर से प्रतिनिधित्व दिया और यह सभी चुनाव जीते भी।

चुनाव के दौरान उन्होंने सिर्फ समाजवादी पार्टी के प्रत्याशियों पर ही फोकस नहीं किया बल्कि सहयोगी कांग्रेस के हिस्से में आई सीटों से भी गाफिल नहीं हुए। नतीजा यह हुआ कि श्री अखिलेश यादव की खींची गई लकीर खुद ब खुद बड़ी होती चली गई

श्री अखिलेश यादव ने फैजाबाद की सामान्य सीट से दलित समाज के बुजुर्ग नेता श्री अवधेश प्रसाद को मैदान में उतारकर उनकी जीत सुनिश्चित करा दी।

यूपी में इंडिया गठबंधन का नेतृत्व करते हुए 62 सीटों पर समाजवादी पार्टी ने अपना प्रत्याशी उतारा था। प्रत्याशी चयन में एक बात और खासतौर पर नोटिस की गई कि श्री अखिलेश यादव ने किसी भी बिरादरी को चुनाव मैदान में उतारने में कोई भेदभाव नहीं किया और सभी जातियों को उनकी नुमाइंदगी देने का प्रयास किया।

प्रत्याशी चयन के बाद श्री अखिलेश यादव ने चुनाव जीतने की एक खास किस्म की रणनीति पर भी काम किया। उन्होंने खुद चुनाव प्रचार की बागडोर संभाली और इतने लंबे चुनाव के दौरान पूरे यूपी को न सिर्फ मथ डाला बल्कि एक-एक सीट का फीडबैक भी लेते रहे। स्थानीय नेताओं से एक-एक कर बात करना और फिर उन्हें बूथ से लेकर मतगणना तक सजग रहने की ताकीद करते रहे।

चुनाव के दौरान उन्होंने सिर्फ समाजवादी पार्टी के प्रत्याशियों पर ही फोकस नहीं किया बल्कि सहयोगी कांग्रेस के हिस्से में आई सीटों से भी गाफिल नहीं हुए। नतीजा यह हुआ कि श्री अखिलेश यादव की खींची गई लकीर खुद ब खुद बड़ी होती चली गई और जिसने 1992 में स्थापित समाजवादी पार्टी को अब तक की सर्वाधिक 37 सीटें दिला दीं।

छा गए अखिलेश

बुलेटिन ब्यूरो

लोकसभा चुनाव-2024 में समाजवादी पार्टी ने यूपी में 37 सीटें जीतकर पूरे देश में कमाल कर दिया। देश की तीसरी सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी समाजवादी पार्टी के मुखिया श्री अखिलेश यादव, इस ऐतिहासिक जीत के बाद न केवल उत्तर प्रदेश बल्कि देश की राजनीति में छा गए हैं। ऐतिहासिक जीत के बाद राजनीति में उनका कद और बढ़ गया है।

श्री अखिलेश यादव ने लोकसभा चुनाव में सिर्फ सीटें ही नहीं जीतीं बल्कि कई और कारणों से आमजन से लेकर दूसरे राजनेताओं का दिल भी जीता। चुनावी भाषणों में अखिलेश जी की जुबान एक बार भी नहीं फिसली। तमाम झंझावतों, जद्दोजहद के बीच उनका वही चिरपरिचित मुस्कुराता चेहरा सभी को फिर भा गया। उनकी एक-एक

बात को जनता ने गौर से सुना, उसपर यकीन किया और भरपूर समर्थन से नवाजा। समाजवादी पार्टी की स्थापना के बाद यह अब तक की सबसे बड़ी जीत है।

श्री अखिलेश यादव ने सटीक रणनीति, बेहतरीन प्रत्याशी चयन, सधा हुआ चुनाव प्रचार, कार्यकर्ताओं से सीधा संवाद कर ऐसा हुनर दिखाया कि भारी भरकम फौज, सरकारी मशीनरी के साथ चुनाव मैदान में उतरी सत्ताधारी भाजपा यूपी में चारो खाने चित हो गई।

यह सब एक दिन में नहीं हुआ।

श्री अखिलेश यादव विधानसभा चुनाव 2022 के बाद से ही लोकसभा चुनाव 2024 की तैयारियों में जुट गए थे। 2022 के चुनाव में भाजपा ने जिस तरह दांवपेंच कर जीती हुई समाजवादी पार्टी को हरा दिया था, उससे सबक लेते हुए श्री अखिलेश यादव ने तैयारियां शुरू की और हिम्मत न हारने की अपनी प्रवृत्ति के तहत विधानसभा चुनाव 2022 के तुरंत बाद समाजवादी पार्टी के मूल वोट आधार के दायरे को बढ़ाने की दिशा में मंथन शुरू कर दिया।

2022 का आधा साल व 2023 के शुरुआती महीनों के भीतर उन्होंने पिछड़ा दलित व अल्पसंख्यक का एक विस्तृत सामाजिक आधार बनाने की रणनीति को अंतिम रूप देते हुए PDA नया नारा दिया। साल 2023 में सपा के लखनऊ स्थित राज्य मुख्यालय पर लगभग रोजाना संगठन से जुड़े पदाधिकारियों, जिला स्तर के संगठनों से जुड़े कार्यकर्ताओं को लखनऊ बुलाकर नियमित रूप से उन्हें संबोधित करते रहे जिसका मूल विषय होता था PDA की अवधारणा को पार्टी में ऊपर से नीचे तक पहुंचा देना।

बैठकों में उन्होंने विस्तार से अपने नेताओं व कार्यकर्ताओं को बताया कि कैसे इस अवधारणा को जमीन पर उतारना है। कुछ ही महीनों के भीतर समाजवादी पार्टी में ऊपर से नीचे तक PDA की अवधारणा रच-बस गई और इसे लोकसभा चुनाव 2024 में कामयाबी दिलाने के लिए पूरी पार्टी लग गई।

उसी दौर में श्री अखिलेश यादव ने लोक जागरण अभियान, पीडीए पंचायत पखवाड़ा और प्रशिक्षण शिविरों, PDA जन जागरण यात्रा भी चलाई। यह वही दौर था जब समाजवादी पार्टी ने मैनपुरी लोकसभा के उपचुनाव व घोसी विधानसभा के उप चुनाव में शानादार सफलता हासिल की। यह PDA की कामयाबी की पहली सीढ़ी थी।

चुनावों की घोषणा होने से काफी पहले ही प्रत्याशी चयन में PDA के प्रतिनिधित्व को पैमाना बनाकर प्रत्याशियों के नाम तय करने का काम भी शुरू हो गया। उसी कवायद का

ही नतीजा था कि श्री अखिलेश यादव ने सबको चौंकाते हुए सपा के प्रत्याशियों का नाम तय करने में अभिनव प्रयोग किया जिसमें PDA को पर्याप्त प्रतिनिधित्व देते हुए पिछड़ा एवं दलित वर्ग से बड़ी संख्या में प्रत्याशी उतारे। यह प्रयोग इस हद तक किया गया कि कुछ सामान्य सीटों पर सपा ने दलित चेहरों को मौका दिया। उसी का नतीजा रहा कि लोकसभा चुनाव 2024 में सपा को शानदार सफलता मिली।

जाहिर है, सधी हुई इस पूरी कवायद के बाद मिली कामयाबी का पूरा श्रेय सपा प्रमुख श्री अखिलेश यादव को ही जाता है। वस्तुत: इन चुनाव परिणामों के बाद श्री अखिलेश यादव न सिर्फ उत्तर प्रदेश बल्कि राष्ट्रीय राजनीति के फलक पर भी छा गए हैं।

गौरतलब है कि समाजवादी पार्टी के संस्थापक नेताजी श्री मुलायम सिंह यादव के नेतृत्व में सपा ने अपना पहला लोकसभा चुनाव साल 1996 में लड़ा। पहले ही चुनाव में यूपी में समाजवादी पार्टी 16 लोकसभा सीटें जीतने में कामयाब रही। तब, सपा का वोट शेयर 20.80 प्रतिशत था। 1998 के लोकसभा चुनाव में सपा ने 20 सीटें जीत लीं और पार्टी का वोटर शेयर 28.7 प्रतिशत था। साल 1999 में हुए लोकसभा चुनाव में सपा 26 सीटें जीत गई।

इसके बाद साल 2004 में हुए लोकसभा चुनाव में सपा ने सबसे बड़ा प्रदर्शन करते हुए 35 सीटें जीतीं। पार्टी को 26.74 प्रतिशत वोट मिले। साल 2009 के चुनाव में सपा की सीटें कम हो गईं और 23 सीटें मिलीं। इसके बाद 2014 और 2019 के लोकसभा चुनाव में सपा महज पांच सीटें ही जीत सकी।

लोकसभा चुनाव 2024 में समाजवादी पार्टी ने बेहतरीन प्रदर्शन करते हुए 37 सीटें जीतीं और सत्ताधारी भाजपा को 33 सीटों पर ही रोक दिया। इस चुनाव में समाजवादी पार्टी का वोट शेयर 33.59 प्रतिशत रहा। कांग्रेस का वोट शेयर 9.46 प्रतिशत और बसपा का 9.39 प्रतिशत। इस चुनाव में समाजवादी पार्टी के वोट प्रतिशत में 17 फीसदी का इजाफा हुआ।

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव 37 सीटें ही जीतने के कारण देश की राजनीति में नहीं छाए बल्कि उन्होंने कई और कमाल किए। जब देश में एक नए गठबंधन की कवायद चल रही थी तो भी उन्होंने सधी हुई रणनीति का इस्तेमाल किया। गठबंधन की शुरुआत से लेकर अंत तक उन्होंने ऐसा कोई बयान या प्रतिक्रिया नहीं व्यक्त की जिससे भाजपा के खिलाफ बनने वाले गठबंधन में किसी तरह का कोई अड़चन आए। वह पूरी ईमानदारी के साथ गठबंधन की इस कवायद का साथ देते रहे।

चुनाव की शुरुआत से लेकर परिणाम तक

श्री अखिलेश यादव का योगदान इसलिए भी हमेशा रेखांकित किया जाएगा क्योंकि मतदान से लेकर मतगणना तक वह सजग रहे और कार्यकर्ताओं को आगाह करते रहे। हर वक्त सजग रहने, सावधान रहने और किसी सेनापति की तरह डटकर कार्यकर्ताओं से सीधा संवाद कर उनका हौसला बढ़ाते रहने के लिए भी श्री अखिलेश यादव के नेतृत्व की सराहना की जाती रहेगी।

श्री अखिलेश यादव ने हमेशा ही सकारात्मक राजनीति को तरजीह दी है इसीलिए जनता ने हमेशा ही उन्हें पसंद किया है। यूपी की राजनीति में पहले भी वह जनता की पहली पसंद थे और इस बार जनता ने उन्हें ऐतिहासिक जीत दिलाकर जनादेश दे दिया है कि इस बार ही नहीं यूपी में 2027 में होने वाले विधानसभा चुनाव में भी श्री अखिलेश यादव ही छाएंगे।

सपा देश की तीसरी सबसे बड़ी पार्टी

बुलेटिन ब्यूरो

लोकसभा चुनाव 2024 में उत्तर प्रदेश में सत्ताधारी भाजपा की सरकारी मशीनरी से जूझते हुए लोकसभा सीटों के पैमाने पर समाजवादी पार्टी प्रदेश की सबसे बड़ी पार्टी और देश की तीसरी सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी तो पूरा देश समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव के राजनीतिक कौशल का कायल हो गया।

यकीनन यह श्री अखिलेश यादव का कौशल ही था कि उन्होंने अपनी नेतृत्व क्षमता से सत्ताधारी दल का मुकाबला किया और मंझे हुए राजनेता के तौर पर अपनी पार्टी को देश की तीसरी सबसे बड़ी पार्टी बना दी।

यूपी में समाजवादी पार्टी ने 37 सीटें जीतीं। साथ ही INDIA गठबंधन के सहयोगी दल कांग्रेस को भी 6 सीटों पर जीत दिला दी। इस चुनाव ने कई और तथ्यों को भी उजागर किया। चुनाव में समाजवादी पार्टी को 33.59 प्रतिशत वोट मिले। कांग्रेस को 9.46 प्रतिशत और बसपा को मात्र 9.39 प्रतिशत वोट हासिल हुए।

2019 के लोकसभा चुनाव में सपा को 17.96 वोट मिले जबकि गठबंधन के नाते बसपा को 19.26 मत हासिल हो गए। इस बार अकेले लड़ने पर बसपा 9.39 प्रतिशत वोट पर ही सिमट गई जबकि समाजवादी पार्टी के वोट प्रतिशत में 17 फीसदी का इजाफा हुआ।

लोकसभा चुनाव 2024 में समाजवादी पार्टी ने यूपी में भाजपा को धूल चटाते हुए 2019 के मुकाबले उसे 33 सीटों पर लाकर खड़ा कर दिया। 2019 में उसे 80 में 62 सीटें मिलीं थीं। तब, सपा से गठबंधन के कारण बसपा ने 10 सीटें जीत लीं थीं मगर इस बार उसे एक भी सीट नहीं मिली क्योंकि उसका कोर वोट भी श्री अखिलेश यादव की नीति व नीयत से संतुष्ट होकर समाजवादी पार्टी के साथ मजबूती के साथ खड़ा हो गया। 2019 में यह बात रेखांकित की गई थीं कि बसपा ने समाजवादी पार्टी के साथ गठबंधन कर 10 सीटें जीत लीं क्योंकि समाजवादी पार्टी के वोट उसे ट्रांसफर हो गए थे जबकि बसपा अपना वोट ट्रांसफर नहीं करा सकी थी।

लोकसभा चुनाव 2024 की कामयाबी की एक वजह यह भी है कि समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने दलित समाज को अपने साथ जोड़ा और पिछड़ा, दलित व अल्पसंख्यक यानि PDA का नारा दिया। दलित समाज को भी यह महसूस हुआ कि श्री अखिलेश यादव ही उनके हितों के लिए संघर्षरत हैं और लगातार उनकी आवाज बन रहे हैं।

चुनाव के दौरान PDA के फार्मूले के तहत दलित समाज मजबूती के साथ समाजवादी पार्टी से जुड़ता गया। यहां तक कि बसपा का कोर वोटर भी श्री अखिलेश यादव के साथ आ गया। समाजवादी पार्टी के साथ जुड़कर बसपा के इस कोर वोटर ने यह संदेश भी दे दिया कि वे बसपा की जागीर नहीं हैं।

यही वजह रही कि लोकसभा चुनाव में दलित समाज, समाजवादी पार्टी के साथ जुड़ा और उसने भरपूर समर्थन किया।

यूपी ने देश को नई राह दिखाई

बुलेटिन ब्यूरो

लोकसभा चुनाव 2024 में समाजवादी पार्टी की ऐतिहासिक जीत पर पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने जनता-जनार्दन का हृदय तल की गहराइयों से आभार व्यक्त करते हुए कार्यकर्ताओं की निष्ठा, लगन और परिश्रम की सराहना की है।

लोकसभा चुनाव में 37 सीटें जीतने पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए श्री अखिलेश यादव ने कहा है कि उत्तर प्रदेश की जागरुक जनता ने देश को एक बार फिर से नई राह दिखाई है, नई आस जगाई है। उन्होंने कहा कि समाजवादी पार्टी की विजय, देश के संविधान, लोकतंत्र और आरक्षण बचाने तथा सामाजिक न्याय की जीत है। यह बंटवारे की नकारात्मक राजनीति के खिलाफ सौहार्द, भाईचारे और सकारात्मक राजनीति की जीत है। यह INDIA गठबंधन और PDA एकता की जीत है।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि यह उस दलित-बहुजन भरोसे की भी जीत है जिसने अपने पिछड़े, अल्पसंख्यक, आदिवासी, आधी आबादी और अगड़ों में पिछड़े सभी उपेक्षित, शोषित, उत्पीड़ित समाज के साथ मिलकर उस संविधान को बचाने के लिए कंधे-से-कंधा मिलाकर संघर्ष किया है। यह समता-समानता, सम्मान-स्वाभिमान, गरिमामय जीवन एवं आरक्षण का अधिकार देता है।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि यह नारी के मान और महिला-सुरक्षा के भाव की जीत है। यह नवयुवतियों-नवयुवकों के सुनहरे भविष्य की जीत है। यह किसान-मज़दूर-कारोबारियों-व्यापारियों की नयी उम्मीदों की जीत है। यह सर्व समाज के सौहार्द-प्रिय, समावेशी सोच वाले समता-समानतावादी सकारात्मक लोगों की सामूहिक जीत है। उन्होंने कहा कि यह संविधान को संजीवनी मानने वाले संविधान-रक्षकों की, लोकतंत्र के हिमायती-हिम्मती लोगों की जीत है। यह ग़रीब की जीत है। लोकतंत्र की जीत है। सकारात्मक राजनीति की जीत है। यह मन के सच्चे और अच्छे लोगों की जीत है। यह INDIA की टीम और PDA की रणनीति की जीत है।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि अयोध्या में जनता ने भाजपा की आशाओं पर पानी फेर दिया। वहां की जनता दुःखदर्द से कराहती रही। भाजपा सरकार ने गरीबों को उजाड़ दिया। उजड़े किसानों को पर्याप्त मुआवजा भी नहीं दिया गया। अपनी जमीन से उजड़े लोगों के पुनर्वास पर ध्यान नहीं दिया गया इसलिए जनता ने भाजपा को सबक सिखा दिया है।

श्री यादव ने कहा कि यूपी की जनता ने 2027 में होने वाले विधानसभा चुनाव के लिए भी अपना जनादेश दे दिया है। कार्यकर्ताओं को अभी से आगामी विधानसभा चुनाव की तैयारियों में जुट जाना होगा। जनता से सीधे जुड़े रहकर उनकी समस्याओं को उठाकर उसके लिए संघर्ष करना होगा। संघर्ष ही समाजवाद का रास्ता है और इसी से समाजवाद की अवधारणा को साकार किया जा सकता है।

सपा संसदीय दल ने अखिलेश को नेता चुना

बुलेटिन ब्यूरो

समाजवादी पार्टी के नवनिर्वाचित 37 सांसदों की पहली बैठक 8 जून को समाजवादी पार्टी के राज्य मुख्यालय पर हुई जिसकी अध्यक्षता समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं कन्नौज के सांसद श्री अखिलेश यादव ने की। बैठक में सर्वसम्मति से श्री अखिलेश यादव को समाजवादी पार्टी संसदीय दल का नेता चुना गया। श्री अखिलेश यादव ने सभी नवनिर्वाचित सांसदों के परिश्रम पर उनकी सराहना की और 2027 के विधानसभा चुनाव की तैयारियों में जुट जाने का आह्वान किया।

सांसदों के साथ बैठक में श्री अखिलेश यादव ने कहा कि लोकसभा के चुनाव परिणामों ने साम्प्रदायिकता को सदैव के लिए महत्वहीन कर दिया है। भाजपा की मनमर्जी के

खिलाफ जनता की मर्जी की जीत हुई है। अब हमें सन् 2027 के विधानसभा चुनाव की तैयारी करनी होगी।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि समाजवादी पार्टी का पीडीए वास्तविक एजेंडा है जिसमें सामाजिक न्याय की अवधारणा है। यह एक पड़ाव है। समाजवादी पार्टी की लड़ाई लम्बी है। समाजवादी व्यवस्था परिवर्तन के रास्ते पर चलने के लिए संकल्पित है।

राज्य मुख्यालय लखनऊ में नव निर्वाचित लोकसभा सदस्यों की बैठक में पूर्व सांसद श्री उदय प्रताप सिंह, राष्ट्रीय प्रमुख महासचिव प्रो रामगोपाल यादव, राष्ट्रीय महासचिव शिवपाल सिंह यादव, सांसद श्रीमती डिंपल यादव, राष्ट्रीय सचिव राजेन्द्र चौधरी, पूर्व प्रदेश अध्यक्ष एवं सांसद नरेश उत्तम पटेल, प्रदेश अध्यक्ष श्याम लाल पाल उपस्थित रहे।

बैठक में श्री अखिलेश यादव ने नवनिर्वाचित सांसदों को जीत की बधाई देते हुए कहा कि सभी ने बहुत परिश्रम किया है। इस भीषण गर्मी में लगातार रात-दिन मेहनत की है जिससे परिणाम अच्छा रहा। उन्होंने कहा कि हमने जनता के मुद्दे उठाए और जनता ने समझा। यही वजह है कि समाजवादी पार्टी सबसे ज्यादा सीट जीतकर देश की तीसरे नम्बर की पार्टी बन गई है।

श्री यादव ने कहा कि पार्टी को बड़े पैमाने पर जनता का समर्थन मिलने से हमारी जिम्मेदारी बहुत बढ़ गई है। समाजवादियों का संघर्ष लोकसभा में जारी रहेगा। उन्होंने कहा कि सकारात्मक राजनीति का दौर शुरू हुआ है। जनता के मुद्दों की जीत हुई है। श्री अखिलेश यादव ने कहा कि भाजपा का लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रति कोई विश्वास नहीं है। भाजपा ने सत्ता में रहते हुए संवैधानिक संस्थाओं को कमजोर किया है। भाजपा सत्ता का दुरुपयोग करने को अपना अधिकार मानती है। भाजपा विपक्ष से नफरत करती है और उसके नेताओं का उपहास उड़ाती है। उन्हें फर्जी मुकदमों में फंसाती है।

18 वीं लोकसभा में सपा के नवनिर्वाचित सदस्य

अखिलेश यादव - कन्नौज

डिंपल यादव-मैनपुरी

अवधेश प्रसाद-फैजाबाद

लालजी वर्मा-अंबेडकरनगर

अफजाल अंसारी-गाजीपुर

नरेशचंद्र उत्तम पटेल-फतेहपुर

आरके चौधरी-मोहनलालगंज

राम प्रसाद चौधरी-बस्ती

बाबू सिंह कुशवाहा-जौनपुर

दरोगा प्रसाद सरोज-लालगंज

सनातन पांडेय-बलिया

राम शिरोमणि वर्मा-श्रावस्ती

हरेंद्र सिंह मलिक-मुजफ्फरनगर

इकरा चौधरी -कैराना

प्रिया सरोज-मछलीशहर

रुचि वीरा-मुरादाबाद

कृष्णा देवी शिवशंकर पटेल-बांदा

धर्मेंद्र यादव-आजमगढ़

रामभुआल निषाद-सुल्तानपुर

मोहिबुल्लाह नदवी-रामपुर

जियाउर्रहमान बर्क-संभल

अक्षय यादव-फिरोजाबाद

पुष्पेंद्र सरोज-कौशांबी

आदित्य यादव-बदायूं

उत्कर्ष वर्मा मधुर-लखीमपुर खीरी

आनंद भदौरिया-धौरहरा

राजीव राय-घोसी

नीरज मौर्य- आंवला

लक्ष्मीकांत पप्पू निषाद-संतकबीरनगर

शिवपाल सिंह पटेल-प्रतापगढ़

जितेंद्र कुमार दोहरे-इटावा

नारायण दास अहिरवार-जालौन

अजेंद्र सिंह लोधी-हमीरपुर

रमाशंकर राजभर-सलेमपुर

बीरेंद्र सिंह-चंदौली

छोटेलाल-रॉबर्टसगंज

देवेश शाक्य-एटा

सहयोगी INDIA गठबंधन के जीते सांसद

राहुल गांधी-रायबरेली

किशोरी लाल शर्मा-अमेठी

उज्ज्वल रमण सिंह-इलाहाबाद

इमरान मसूद-सहारनपुर

तनुज पुनिया-बाराबंकी

राकेश राठौर-सीतापुर

YOUNG MINDS ON THE RISE

Iqra Hasan
Constituency
02 Kairana

Priya Saroj
Constituency
74 Machhlishahr

Pushpendra Saroj
Constituency
50 Kaushambi

8th June, Samajwadi Party head office, Lucknow: *The Samajwadi bulletin team got a chance to have a conversation with three young parliamentarians, after their meeting in the SP Party Office, about their journey into politics and get their opinion on some major issues of political importance.*

Today, all three sit confidently in the second row of the Samajwadi Party auditorium along with their newly elected fellow Members of Parliament.

All three of them have shown great perseverance, during their election campaign in their respective constituencies, and have emerged victorious. Thus, showing a new light of hope for the politics of Uttar Pradesh.

Iqra Hasan

Today, Iqra Hasan, 29, has joined us for a discussion about her political career. With her calm composure and serene aura, Iqra had an astounding campaigning journey. She defeated the incumbent MP Pradeep Choudhary from the BJP with a substantial margin 70 thousand votes. Her family's well-established prominence in the constituency of Kairana aided her ability to draw in the votes which eventually led to her thumping victory.

It can be said that politics runs in the blood of the Hasan family, her grandfather was elected MP in 1984 from Kairana. Her father was elected in 1996. In 2009 and 2018 (bye-election), her mother won.

Her brother was elected MLA in both the 2017 and 2022 UP assembly elections. However, during the 2022 elections her brother was arrested and jailed. Even so, he emerged victorious. How? Because it was Iqra who campaigned vigorously and played a huge role in securing the win.

She describes the year 2022 as "very difficult". Her brother was transferred to the Chitrakoot jail. Every date of hearing he was brought back to UP from almost a 1000 kilometres away. Iqra explains, "we used to follow his car throughout the journey, both coming and going. We were scared that something will be done to him, like it is being done these days in jails by the police. Moreover, three cases are going on against him that too in three different courts, all on dubious charges, which made it very stressful for the whole family".

Iqra is a highly qualified woman. Before her political career began she was a practising lawyer. She went to an all girls boarding school in Delhi for 12 years. Then completed her graduation from Lady Shree Ram college following which she decided to do law from DU Faculty of law. After getting her degree in L.L.B she went on abroad, to London and obtained an Msc. in International Law and Politics. Nonetheless, when Covid-19's first wave hit, she returned to India. Next she dreamt of doing a PhD, all her applications, forms and processes were final, but then Covid's second wave came on, forcing her to drop her plans.

On being asked about her plans for her constituency, Kairana, she is very determined on solving the problems of the farmers, especially that of the sugarcane crop.

"My constituency falls in the farmer's belt, it is the 'ganna' (sugarcane) crop belt, there is a major problem of recurring dues here".

Furthermore, Ms. Hasan points out another important issue that is affecting Kairana, that is the absence of an 'only girls college'. She tells us that the area only has co-educational colleges, and for various reasons, after a certain point the girls do not want to study in a co-educational environment. Due to this, many girls drop out of college, and their education remains incomplete. She is quite confident that during her term she will be able to resolve these problems . The newly elected MP plans to raise these issues in the

parliament, in front of the government.

Samajwadi Party's strong lobbying power due to its increased representatives will definitely help the cause. The halls of the Lok Sabha will see a third generation of parliamentarians' from the respectable Hasan family. Iqra will keep forth the demands of the voters of Kairana and make sure that their needs are met.

Her grass roots understanding of her constituency is sure to make her a great leader in the contemporary political scenario.

Quick facts

Iqra was born on the 25th of August, 1995 in Kairana. She likes to watch TV series and movies in her free time. Presently, she enjoys listening to artists like Ali Sethi and Shubh. Her favourite Samajwadi song is 'Janta Pukarti Hai'.

Priya Saroj

Priya's fiery speeches against the double engine government during her campaign, has gained tremendous popularity amongst the masses.

Ms. Saroj's hard work along with her exceptional oratory prowess resulted in her victory from the Machhlishahr constituency.

What added to Priya's widespread popularity was her extensive door to door campaigning approach. This strategy was a huge success and ultimately resulted in the defeat of her nearest rival from the BJP.

Fighting from Machhlishahr did not come as a surprise to her, as she had a preconceived notion about it. Initially Party President, Mr. Akhilesh Yadav had asked her father Mr. Tufani Saroj to fight, but he is already a sitting MLA and a by-poll would have had to be conducted for the same. Being well-read as well as knowing the roots of the constituency, the president then suggested that Priya should take the reins.

With her humble and down to earth personality, Priya is now a proud parliamentarian.

Unsurprisingly, there has been a change in her way of living. Earlier she was practising law at the Supreme Court in New Delhi. However, now she plans to move permanently to Machhlishahr for her people. She says "now I will remain full time in politics", humorously she adds "ab mein karytakarta logo ka case lena shuru karungi". She was also preparing to become a judge but now those plans have changed.

Additionally, she highlights the scrutiny that women are often put under due to their clothing choices. Earlier she could wear whatever she felt like, but now she feels that she has to think twice. Being in the limelight is definitely not easy!

Presently, her life's motto is that Machhlishahr should get a new identity. "I want to do something new, something different so that the people come to know of my constituency". She is dedicated to work for the people of her constituency.

Upliftment of women is her main aim. Priya vividly recounts her campaigning experiences.

She tells us that the women in the villages were hesitant to be actively involved in the political processes of their area. She visited numerous villages and when she asked the women regarding their choice of vote, they were mostly undecided. The reason for this predominately, was that they depend on their male counterparts to tell them whom to vote for. She wants women to "have a thought of their own, their own point of view", a sense of awareness so that they can be empowered.

She strongly believes that women should be kept on the front-foot of politics. "This will be a good message not only for Machhlishahr but for the

whole country" she adds.

Priya also points out that her constituency is affected by several cases of violence, assault and harassment against women. She wants the women who are suffering to know what their first step of action should be. Such as the procedure to file an FIR, how investigations and trials are conducted, etc.

"I informed a lot of women that what they should do if something wrong is done to them", Priya says. During her campaign, she made several women aware and learn Dharas (Clauses). "Awareness and law and order are my main aims". Being a lawyer herself, she realises the difference that awareness about rights can make in a woman's life.

Her nukkad sabhas saw big turnouts of women. According to Ms. Saroj, 70-80 % women of their respective areas turned up for the sabhas. A massive contribution for this was her being a woman candidate and having other lady party workers along, made the women of the villages feel somewhat more connected to them and come out more.

Lastly, Priya recalls her childhood days, when her father Mr. Tufani Saroj was MP from Machhlishahr. She used to accompany him occasionally to the Central Hall where she enjoyed eating gulab jamuns. Now she will walk through the doors of the Parliament carrying the hopes of Machhlishahr, the women of Machhlishahr. A huge responsibility, on which she will surely deliver.

Quick facts

Priya was born in the holy city of Varanasi on 23rd November, 1998. She loves to dance, so much so that she wanted to take up dancing as a profession. However, destiny had something completely different written for her. She is also an amazing chef and frequently finds herself cooking up post-midnight meals for her brother.

Pushpendra Saroj

The youngest MP in the history of India, Mr. Pushpendra Saroj completed his schooling from the prestigious Welham boys school and then went on to study in Queen's Mary University of London for his graduation. There he attained a B.com in Accounting and Management.

Soon after coming back to India he started a business, working alone most of the time. Little did he know that his life path was about to take such a drastic turn and in 4 months time nothing would be the same. Soon enough, he would be sitting amongst the most influential politicians in the country, eagerly wanting to listen and learn from them; the aim of all of it being the betterment of his people, the people of Kaushambi.

Being abroad for 3 years has changed his perspective, the way of his thinking is new. He explains, "Party President had also studied from abroad and we saw the implementation of his policies in the government. Connecting our people with basic necessities, with the help of a new thought and a new vision from abroad, is a good combination, a good cocktail of both."

Consequently, after his introduction into politics, there was a huge shift in his lifestyle, from the media attention to the "straightforward dialogue delivery". He never thought that his entry into politics would be so early, he feels that this only happened because "there was history to be created and God wanted it". He has also started using social media very differently than he usually did. He now has a media team that handles everything. He tells us that initially his father, Mr. Indrajit Saroj was against social media because he had been a "very dharadar wala neta". However, during Pushpendra's campaign, the platform proved to be very advantageous as it connected a lot of people with his thoughts and ideas.

Today, immaculately dressed in a black Nehru jacket paired with linen co-ord, Mr. Saroj sits content after securing his win. On asking him his plans for Kaushambi he said firstly, he wants to strengthen and provide for the very basic necessities that his people are lacking, i.e., he aims to resolve the problems of electricity, road and water in his constituency.

Secondly, he highlights that, "the problem of paper leaks and unemployment are very serious", he expresses, "everyone should have an opportunity to provide for their households, the government has taken this opportunity away. So we will work towards this". He firmly believes that the youth has a lot of hope from the party, and the party's primary responsibility should be to them.

Furthermore, he adds "India is great and competent, with great minds, but infrastructure needs to be built for this. Our work is to provide infrastructure, rest the people are so 'shaksham' that they will optimally utilise the infrastructure and will be able to grow as a society".

When asked about the issues of women, he does recognise the problems of representation, however he believes that direct benefit transfer is the main issue that should be worked towards, so that underprivileged women are able to run their homes. Moreover he pointed out that the 'Ujjwala Yojana'

implemented by the central government has rendered useless due to rapid inflation in the country. He is hopeful when the SP government is formed the party's pension scheme will be able to emancipate the women.

Pushpendra is grateful to his voters, because they have set two records in this election. One electing India's youngest MP and two, the largest number of votes a youngest parliamentarian has ever secured. He said, "sara shrey unko jata hai (all the credit goes to the people)". On the first day of his campaigning he had announced that he does not know anything about 'jaati', therefore he will "not do any politics based on jaati or dharm". This statement seemed to have struck a cord with the voters and attracted several more communities to vote for him.

Mr Saroj is confident that he has a "long haul in politics and this is just the beginning". In his words "When history books will be turned it is not Pushpendra Saroj who's name will be written it will be of Kaushambi ki janta, jinka naam likha hoga".

Now, the people of Kaushambi look up to him, to deliver on his promises.

Quick facts

Pushenpendra was born in Allahabad, on 1st March, 1995. He is a sports enthusiast. He plays hockey, football, cricket, and squash routinely . Mr. Saroj is also a huge animal lover, and has a lovable pack of 3 dogs.

A message from the Party President

The Party President, Shri Akhilesh Yadav said that he decided in favour of Iqra, Priya and Pushpendra because they are young, and they will be able to better understand the new challenges that exist in the modern society.

Taking up after her father, Priya had been a strong, contender for the constituency of Machhlishahr, thats why she was chosen, he explains. She proved her capability by winning the seat.

He said that "Iqra is from a political family, she is well-educated, young, people know her, she knows how to speak, give a speech". He felt that since her whole family has been present politically in Kairana from a long time, it will work to her advantage and she will gain from that.

He recalls his meeting with Pushpendra and his father, Mr. Indrajit Saroj. He says that Pushpendras age was becoming an issue and for this reason his father was a bit hesitant. However, the President told Mr. Indrajit, "aap ladaiye apne ladke ko", and to Pushpendra, "lado kuch nahin hota". He won by more than one lakh votes!

The Party President's belief is that we should always give young people the opportunity because when young people come in the picture , young thoughts come along with them as well.

On being asked about the accusations of nepotism since all the three parliamentarians come from a political family background, he replied that he does not consider this an issue at all. These elections were very crucial and if a family member wants to come into politics, and because it is amongst the people that they are going, they are going to struggle, they are going to prove themselves , so I gave them the opportunity to do so. And the people have clearly accepted them.

8th June,2024: MP's Meeting at Samajwadi Party head office, Lucknow

मजबूत विपक्ष की भूमिका निभाएगा INDIA

सही समय पर सही कदम उठाने की रणनीति

बुलेटिन ब्यूरो

लोकसभा चुनाव 2024 के नतीजों के बाद बहुमत से कुछ कम सीटें मिलने पर INDIA गठबंधन ने मजबूत विपक्ष की भूमिका निभाने का फैसला किया है। गठबंधन के नेताओं ने तय किया है कि सही समय पर सही कदम उठाया जाएगा

जोड़तोड़ कर सत्ता में आने के बजाय विपक्ष में बैठने के INDIA गठबंधन के फैसले की राजनीति के जानकारों ने सही फैसला बताते हुए इसकी सराहना की जा रही है। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने भी इस निर्णय का समर्थन किया है।

चुनाव नतीजे के बाद नई दिल्ली में INDIA गठबंधन की पहली बैठक में श्री अखिलेश यादव ने मजबूती व तर्कसंगत ढ़ंग से अपना नजरिया पेश किया। INDIA गठबंधन के सहयोगियों ने उनके वक्तव्य पर सहमति जताई।

चुनाव पूर्व हुए गठबंधन और नतीजों के बाद भी मजबूती व एकजुटता के साथ INDIA गठबंधन का साथ देने पर श्री अखिलेश यादव की देशभर के राजनीतिक दलों में सराहना हो रही है और यह स्पष्ट हो गया है कि गठबंधन धर्म निभाने में श्री अखिलेश यादव का कोई सानी नहीं है।

लोकसभा चुनाव के नतीजे 4 जून को आए। INDIA गठबंधन को 234 सीटें मिलीं हैं जिसमें समाजवादी पार्टी की 37 सीटें हैं और वह इस गठबंधन में कांग्रेस के बाद सबसे मजबूत स्थिति में है। देश में वह तीसरे नंबर की पार्टी हो गई है।

चुनाव परिणाम आने के बाद 5 जून को नई दिल्ली में INDIA गठबंधन के घटक दलों की पहली बैठक हुई। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे के आवास पर हुई इस बैठक में समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव भी शामिल हुए।

बैठक में कहा गया कि इस गठबंधन में वे दल हैं जो संविधान की प्रस्तावना में अटूट आस्था रखते हैं और इसके आर्थिक, सामाजिक तथा राजनीतिक न्याय के उद्देश्यों को लेकर प्रतिबद्ध हैं। चर्चा के दौरान बैठक में यह कहा गया कि लोकसभा चुनाव का जनादेश प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के खिलाफ है लेकिन वह इसे नकारने वाले हैं।

बैठक में सर्वसम्मत से निर्णय लिया गया कि INDIA गठबंधन मजबूत विपक्ष की भूमिका निभाएगा और जनता के हितों की

अखिलेश की पहल से INDIA हुआ कामयाब

बुलेटिन ब्यूरो

लोकसभा चुनाव 2024 में उत्तर प्रदेश में INDIA गठबंधन का नेतृत्व कर रहे समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने साबित कर दिया कि यूपी की जनता के वे ही नायक हैं। गठबंधन का लोकसभा चुनाव में शानदार दर्शन साबित करता है कि यूपी में श्री अखिलेश यादव का काम आज भी बोलता है और वे जनता की पहली पसंद हैं।

सिर्फ उत्तर प्रदेश ही नहीं, अगर राष्ट्रीय स्तर पर चुनाव पूर्व INDIA गठबंधन की पूरी कवायद पर नजर डालें तो समझ में आता है कि इस गठबंधन को आकार देने और उसके पक्ष में माहौल बनाने वाले भी श्री अखिलेश यादव ही हैं। उन्होंने अपनी तरफ से पहल करते हुए उत्तर प्रदेश में जिस तरह कांग्रेस के लिए 17 सीट और तृणमूल कांग्रेस के लिए एक सीट छोड़कर खुद 62 सीटों पर लड़ने का निर्णय लेते हुए चुनावी दृष्टि से सबसे महत्वपूर्ण राज्य में इंडिया गठबंधन को जमीन पर उतार दिया।

श्री अखिलेश यादव ने पहले प्रयास से ही पूरी ईमानदारी के साथ गठबंधन का साथ देना शुरू किया। जैसे ही अखिलेश जी ने बड़ा दिल दिखाते हुए उत्तर प्रदेश में सीटों का बंटवारा कर दिया वैसे ही विभिन्न राज्यों में विपक्षी दल इंडिया गठबंधन को सीटों के बंटवारे की शक्ल देने में जुट गए।

यही वह वक्त था जबकि पूरे देश में INDIA गठबंधन के पक्ष में माहौल बन गया। यूपी के सबसे बड़े और मजबूत विपक्षी दल समाजवादी पार्टी के INDIA गठबंधन के साथ आने के बाद दूसरे राज्यों के दल भी INDIA गठबंधन के साथ खड़े हो गए।

श्री अखिलेश यादव ने गठबंधन के बाद पूरे यूपी को मथ डाला और ऐसी फिजा बना दी कि हर तरफ INDIA गठबंधन मजबूत होता दिखने लगा। जनता, खुलकर श्री अखिलेश यादव के पक्ष में बोलने लगी।

यूपी में जैसे ही INDIA गठबंधन मजबूत होता दिखा, दूसरे राज्यों में स्पष्ट संदेश गया कि INDIA गठबंधन ही आने वाला है। तब, उन राज्यों की जनता ने भी सीधे तौर पर INDIA गठबंधन को मजबूत करने की ठान ली और इस तरह पूरे देश में INDIA गठबंधन के पक्ष में माहौल बनता गया।

नतीजों के बाद अब यह साफ हो गया है कि स्पष्ट नजरिया, विकासपरक सोच और शालीन व सरल व्यवहार के कारण जनता की पहली पसंद श्री अखिलेश यादव ही हैं, यह चुनाव परिणामों ने प्रमाणित कर दिया है। भाजपा को पीछे छोड़ते हुए 37 सीटों पर जीत दर्ज करने वाले श्री अखिलेश यादव ने विरोधियों की बोलती बंद कर दी है।

आवाज बुलंद करेगा। बैठक में श्री अखिलेश यादव के अलावा 19 दलों के 33 वरिष्ठ नेता शामिल हुए और नतीजों के बाद आगे की रणनीति पर विस्तार से चर्चा की।

चर्चा के बाद निर्णय लिया गया कि INDIA गठबंधन मजबूत विपक्ष की भूमिका निभाते हुए देश के लोकतांत्रिक ढांचे को और मजबूत करेगा। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने भी इसपर सहमति जताई। बैठक में कहा गया कि हम सब एक साथ और तालमेल से लड़े। सबने पूरी ताक़त झोंकी और भाजपा को रोका। जनता ने भाजपा को बहुमत न देकर उनके नेतृत्व के प्रति साफ़ संदेश दिया है मगर ये लोग जनादेश की कद्र करने वालों में नहीं हैं।

INDIA गठबंधन ने तय किया कि फासिस्ट ताकतों के खिलाफ उनकी लड़ाई जारी रहेगी और सही समय पर सही कदम उठाया जाएगा और यह देखा जाएगा कि भाजपा सरकार लोगों की इच्छा के अनुसार सही कदम उठा रही है या नहीं। जनता के हितों की अनदेखी होने पर INDIA गठबंधन खामोश नहीं रहेगा।

बैठक में श्री अखिलेश यादव और समाजवादी पार्टी के प्रमुख राष्ट्रीय महासचिव प्रोफेसर राम गोपाल यादव के अलावा कांग्रेस की पूर्व अध्यक्ष सोनिया गांधी, राहुल गांधी, पार्टी महासचिव प्रियंका गांधी, तृणमूल कांग्रेस के महासचिव अभिषेक बनर्जी, राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (एसपी) के प्रमुख शरद पवार, द्रमुक नेता और तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एम के स्टालिन, राजद से तेजस्वी यादव, आम आदमी पार्टी के सांसद संजय सिंह और राघव चड्ढा, शिवसेना (यूबीटी) के नेता संजय राउत शामिल हुए।

अयोध्या में भी सपा की जय भाजपा परास्त

बुलेटिन ब्यूरो

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव की सधी हुई रणनीति, राजनीतिक कौशल ने फैजाबाद (अयोध्या) संसदीय सीट पर भी भाजपा को हरा दिया। यहां से समाजवादी पार्टी के श्री अवधेश प्रसाद चुनाव जीते हैं। उन्होंने भाजपा के लल्लू सिंह को 54,567 वोटों से शिकस्त दी।

लोकसभा चुनाव-2024 की घोषणा होते ही समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने फैजाबाद की मिल्कीपुर से विधायक श्री अवधेश प्रसाद को चुनाव मैदान में उतारा। श्री अवधेश प्रसाद की उम्मीदवारी को उसी वक्तश्रीअखिलेश यादव की दूरदर्शी रणनीति का हिस्सा माना गया था। क्योंकि फैजाबाद सामान्य सीट होने के बावजूद सपा प्रमुख ने अनुसूचित जाति से आने वाले श्री अवधेश प्रसाद को यहां से प्रत्याशी बनाकर सबको चौंका दिया।

जैसे-जैसे चुनाव का रंग गाढ़ा होता गया, श्री अखिलेश प्रसाद के चयन की सराहना होने लगी। दलित समाज से आने वाले श्री अवधेश प्रसाद ने भी खूब मेहनत की। फैजाबाद (अयोध्या) की यह सीट भाजपा के लिए प्रतिष्ठा वाली थी और इस सीट को भाजपा अपना मानकर चल रही थी मगर इस सीट पर भी श्री अखिलेश यादव का PDA का फॉर्मूला सिर चढ़कर बोला और आखिरकार समाजवादी पार्टी ने यह सीट भाजपा से छीन ली। इस सीट पर दुनियाभर की नजर थी और परिणाम ने सभी को

अयोध्या की जीत से नफरत की राजनीति खत्म
-अखिलेश

बुलेटिन ब्यूरो

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने 14 जून को प्रदेश कार्यालय में एकत्र सैकड़ों कार्यकर्ताओं से बधाई स्वीकार करने के बाद चुनाव में उनकी मेहनत, लगन की सराहना की। कार्यकर्ताओं से मुखातिब होते हुए श्री अखिलेश यादव ने कहा कि 2024 के लोकसभा चुनाव ने भारत की राजनीति को बदलने का काम किया है। अयोध्या जनपद के लोकसभा क्षेत्र फैजाबाद से सांसद श्री अवधेश प्रसाद की जीत से जनता ने नफरत की राजनीति को खत्म कर दिया है।

14 जून को समाजवादी पार्टी के प्रदेश मुख्यालय लखनऊ के डॉ राममनोहर लोहिया सभागार में बड़ी संख्या में मौजूद पार्टी कार्यकर्ताओं, नेताओं, विधायकों तथा नवनिर्वाचित लोकसभा सदस्यों को संबोधित करते हुए श्री अखिलेश यादव ने कहा कि इस लोकसभा चुनाव में समाजवादी पार्टी को ऐतिहासिक जीत मिलने से समाजवादी पार्टी की ताकत बढ़ी है और नेताओं, कार्यकर्ताओं में नई ऊर्जा का संचार हुआ है। 2027 में होने वाले आगामी विधानसभा चुनाव में जीत का लक्ष्य पाने के लिए हमें भाषा-व्यवहार बेहतर रखते हुए सभी का सम्मान करना भी सीखना होगा। हमें जनता से जुड़े रहना है। जनता का आशीर्वाद हमारे साथ है।

श्री यादव ने कहा कि जनता के सामने कोई नहीं टिक सकता है। चुनाव में जनता ने भाजपा का अहंकार तोड़ा है। भाजपा नेताओं को अब नींद नहीं आती है। एनडीए नकारात्मक-निगेटिव गठबंधन साबित हुआ जबकि पीडीए प्रगतिशील प्रोगेसिव गठबंधन रहा। समाजवादी पार्टी पीडीए-इंडिया गठबंधन ने संविधान को बचाने की लड़ाई लड़ी। समाजवादी विचारधारा का संघर्ष बराबर जारी रहेगा।

चौंकाया।

फैजाबाद (अयोध्या) सीट पर श्री अवधेश प्रसाद को 554289 वोट मिले जबकि भाजपा के लल्लू सिंह को 499722 वोट ही मिले। यहां बसपा के सच्चिदानंद पांडेय को महज 46407 वोट ही मिले। इस सीट पर कुल 13 उम्मीदवार मैदान में थे।

4 जून को जब मतों की गणना शुरू हुई तो शुरुआत से ही समाजवादी पार्टी के प्रत्याशी अवधेश प्रसाद की बढ़त शुरू हुई जो अंत तक कायम रही। भाजपा की यह ऐसी शिकस्त थी जिसपर वह तिलमिला उठी और दलित समाज से आने वाले बुजुर्ग नेता श्री अवधेश प्रसाद की जीत और भाजपा की हार पर अयोध्या वालों पर सवाल उठाए जाने लगे। अयोध्या के लोगों के इस निर्णय को शिरोधार्य करने के बजाए उनके लिए अनापशनाप शब्दों का इस्तेमाल किया जाने लगा जिसे अयोध्यावासी शायद ही कभी भूल पाएं।

इधर 12 जून को अयोध्या के समाजवादी पार्टी के जिला, ब्लाक प्रकोष्ठों के अध्यक्षों समेत 56 सदस्यीय प्रतिनिधिमण्डल ने जिलाध्यक्ष पारस नाथ यादव के नेतृत्व में समाजवादी पार्टी के प्रमुख श्री अखिलेश यादव से भेंट की। अयोध्या से आए समाजवादी पार्टी के प्रतिनिधिमण्डल ने लोकसभा चुनाव में ऐतिहासिक जीत पर बधाई दी। राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने अयोध्या की जीत पर धन्यवाद दिया।

अयोध्या से चला समाजवादियों का यह दल सैफई पहुंचकर नेताजी श्री मुलायम सिंह यादव जी की समाधिस्थल पर पुष्पांजलि अर्पित करेगा।

पश्चिम से पूरब तक बढ़ती गई सपा

बुलेटिन ब्यूरो

लोकसभा चुनाव 2024 में पश्चिम से पूरब तक चरण दर चरण समाजवादी पार्टी मजबूत होती गई। पहले चरण के बाद हर चरण में उसने अपनी पकड़ मजबूत की और चुनाव नतीजों को चमत्कारिक तरीके से अपने पक्ष में कर लिया। सात चरणों में समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने अपनी पूरी ताकत झोंक दी और रैलियों के अलावा बूथवार ऐसी रणनीति तैयार की कि आखिरकार समाजवादी पार्टी को 37 सीटें जिता दीं। साथ ही कांग्रेस को भी 6 सीटें दिला दीं।

चुनाव का पहला चरण सहारनपुर से शुरू हुआ। इस चरण में कुल 8 सीटों सहारनपुर, बिजनौर, कैराना, मुजफ्फरनगर, नगीना, मुरादाबाद, रामपुर और पीलीभीत के लिए मतदान हुआ जिसमें समाजवादी पार्टी व कांग्रेस ने 5 सीटें जीत लीं। इस चरण में समाजवादी पार्टी को 4 सीटें मिलीं। दूसरे चरण में अमरोहा, मेरठ, बागपत, गाजियाबाद, गौतमबुद्धनगर, बुलंदशहर, अलीगढ़ और मथुरा के लिए मतदान हुआ। यहां सरकारी मशीनरी का जमकर दुरुपयोग हुआ और कई सीटों पर समाजवादी पार्टी के जीते हुए उम्मीदवारी अंत में हार गए जबकि इस चरण में कई सीटों पर समाजवादी पार्टी बहुत अच्छी स्थिति में रही। तीसरे चरण में संभल, हाथरस, आगरा, फतेहपुर सीकरी, फिरोजाबाद, मैनपुरी, एटा, बदायूं, आंवला, बरेली की कुल 10 सीटों पर मतदान हुआ जिसमें समाजवादी पार्टी ने 6 सीटें अपने नाम कर लीं।

चौथे चरण में समाजवादी पार्टी ने पकड़ मजबूत करते हुए 5 सीटें जीत लीं। इस चरण में शाहजहांपुर, लखीमपुरी खीरी, धौरहरा, सीतापुर, हरदोई, मिश्रिख, उन्नाव, फर्रुखाबाद, इटावा, कन्नौज, कानपुर, अकबरपुर और बहराइच की 13 सीटों के लिए मतदान हुआ जिसमें सपा ने 4 सीटें व कांग्रेस ने एक सीट जीत लीं। पांचवें चरण में लखनऊ, मोहनलालगंज, रायबरेली, अमेठी, जालौन, झांसी, हमीरपुर, बांदा, फतेहपुर, कौशांबी, बाराबंकी, फैजाबाद, कैसरगंज, गोंडा की कुल 14 सीटों के लिए मतदान हुआ और इस चरण में सपा ने 7 सीटें व कांग्रेस ने तीन सीटें जीतकर भाजपा को बुरी तरह पस्त कर दिया।

छठें चरण में समाजवादी पार्टी ने कमाल कर दिया। इस चरण में सुल्तानपुर, प्रतापगढ़,

फूलपुर, इलाहाबाद, अंबेडकरनगर, श्रावस्ती, डुमरियागंज, बस्ती, संतकबीरनगर, लालगंज, आजमगढ़, जौनपुर, मछलीशहर व भदोही में मतदान हुआ। यहां की 14 सीटों में कुल 10 सीटें समाजवादी पार्टी व एक कांग्रेस ने अपने नाम कर ली।

सातवां व अंतिम चरण के बारे में समीक्षकों की राय थी कि यह भाजपा का गढ़ है मगर यहां समाजवादी पार्टी ने भाजपा को बुरी तरह शिकस्त देते हुए कुल 13 सीटों में 6 सीटें हासिल कर लीं। इस चरण में महराजगंज, गोरखपुर, कुशीनगर, देवरिया, बांसगांव, घोसी, सलेमपुर, बलिया, गाजीपुर, चंदौली, वाराणसी, मिर्जापुर, रॉबर्ट्सगंज में चुनाव हुए। यहां की कुछेक सीटें ऐसी थीं जहां कांग्रेस-सपा प्रत्याशी जीतते-जीतते, हार गए।

पहले चरण से अंतिम चरण तक चुनाव में समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने इतनी सटीक रणनीति बनाई कि भाजपा चारों खाने चित हो गई। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि समाजवादी पार्टी की ओर से एकमात्र नेता श्री अखिलेश यादव ही थे और मुकाबले में सत्ताधारी दल के तमाम नेता व सरकारी मशीनरी भी लेकिन श्री अखिलेश यादव की सटीक रणनीति को भाजपा भेद नहीं सकी और उसे हर चरण में मुंह की खानी पड़ी।

नेताजी के गढ़ में सरपट दौड़ी साइकिल

बुलेटिन ब्यूरो

समाजवादी पार्टी के संस्थापक मुलायम सिंह यादव-नेताजी का यूं तो पूरे उत्तर प्रदेश में दबदबा था लेकिन इटावा-मैनपुरी-कन्नौज, फिरोजाबाद आदि का इलाका उनका गढ़ कहा जाता था और यहां की जनता के लिए नेताजी हमेशा ही सर्वमान्य नेता रहे। लोकसभा चुनाव 2024 में भी नेताजी के इस गढ़ में समाजवादी पार्टी की साइकिल सरपट दौड़ी और उसने इस इलाके की तमाम सीटों पर भाजपा को करारी शिकस्त दी।

नेताजी-मुलायम सिंह यादव के दिवंगत होने के बाद यह पहला चुनाव था। इस इलाके में भाजपा ने तमाम जोर आजमाइश की। प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री समेत तमाम बड़े नेताओं ने रैलियां कीं, डेरा डाला मगर समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव की रणनीति के कारण नेताजी के इस गढ़ में भाजपा सफल नहीं हो सकी।

श्री यादव ने ऐसी चुनावी बिसात बिछाई कि भाजपा को करारी हार का सामना करना पड़ा। कन्नौज से खुद श्री अखिलेश यादव ने चुनाव लड़ा और वह 1.70 लाख मतों के बड़े अंतर से निर्वाचित हुए। श्री अखिलेश यादव को जनता ने 52.74 प्रतिशत वोट दिया जबकि भाजपा के निवर्तमान सांसद को 38.71 प्रतिशत वोट ही मिले। वर्ष 2019 में यहां समाजवादी पार्टी को 48.29 प्रतिशत वोट मिले थे। श्री अखिलेश यादव को करीब 5 प्रतिशत ज्यादा वोट मिले हैं।

मैनपुरी में भी साइकिल ने सरपट दौड़ लगाई। यह सीट दिवंगत नेताजी की रही है और उपचुनाव में नेताजी की बहू व श्री अखिलेश यादव की धर्मपत्नी श्रीमती डिंपल

यादव ने इस सीट से जीत दर्ज की थी। लोकसभा चुनाव 2024 में श्रीमती डिंपल यादव ने 2.21 लाख रिकार्ड मतों से जीत दर्ज की। उन्हें 56.79 प्रतिशत वोट मिले जबकि भाजपा को 35.76 प्रतिशत ही। 2019 के चुनाव में यहां समाजवादी पार्टी को 53.75 प्रतिशत वोट मिले थे और भाजपा को 44.09 प्रतिशत। नेताजी के दिवंगत होने के बाद 2022 के उपचुनाव में यहां से सपा की श्रीमती डिंपल यादव को 64.08 प्रतिशत वोट मिले थे।

इटावा लोकसभा सीट पर भी समाजवादी पार्टी की साइकिल ने सरपट दौड़ लगाते हुए भाजपा को शिकस्त दी। समाजवादी पार्टी के जितेंद्र सिंह दोहरे ने करीब 58 हजार वोट से चुनाव जीता। यहां सपा को 47 प्रतिशत और भाजपा को 41.82 प्रतिशत वोट मिले। 2019 के लोकसभा चुनाव में समाजवादी पार्टी को 44.53 प्रतिशत वोट मिले थे।

फिरोजाबाद में समाजवादी पार्टी के अक्षय प्रताप यादव ने भाजपा प्रत्याशी विश्वदीप सिंह को करीब 89 हजार वोटों से हराया। समाजवादी पार्टी को 49.09 और भाजपा को 40.98 फीसदी मत मिले। ऐसे ही एटा में राजवीर सिंह राजू को समाजवादी पार्टी के देवेश शाक्य ने करीब 25 हजार वोटों से हराया। इस सीट पर समाजवादी पार्टी को 47.07 प्रतिशत और भाजपा को 44.34 प्रतिशत वोट मिले।

नेताजी के श्रीचरणों में जीत समर्पित कर भावुक हुए अखिलेश

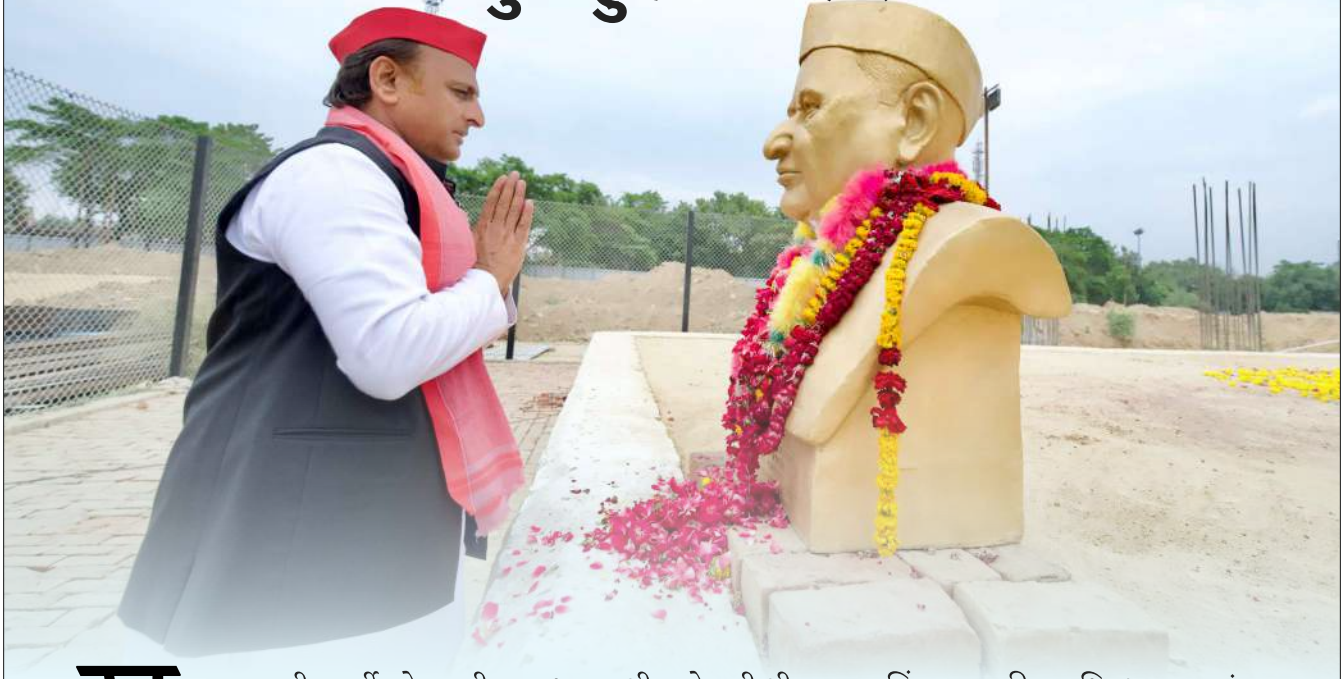

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने सैफई में नेताजी मुलायम सिंह यादव की समाधि स्थल पर पहुंचकर पार्टी की ऐतिहासिक जीत को नेताजी के श्रीचरणों में समर्पित करते हुए भावुक हो गए। उन्होंने कहा कि नेताजी होते तो इस ऐतिहासिक जीत पर गौरवान्वित होते।

11 जून को श्री अखिलेश यादव सैफई पहुंचे। यहां उन्होंने नेताजी श्री मुलायम सिंह यादव की समाधि स्थल पर पहुंच कर पुष्पांजलि अर्पित की और समाजवादी पार्टी की ऐतिहासिक जीत को नेताजी के श्रीचरणों में समर्पित किया। इसके बाद श्री यादव ने मैनपुरी व करहल के कार्यकर्ताओं, वरिष्ठ नेताओं, आमजन से आत्मीय मुलाकात की और चुनाव में सहयोग के लिए आभार जताया।

कन्नौज की जीत में इत्र संग भाईचारे की सुगंध

बुलेटिन ब्यूरो

कन्नौज के इत्र की खुशबू संग मोहब्बत का पैगाम लेकर कन्नौज संसदीय क्षेत्र के चुनाव मैदान में उतरे समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव की ऐतिहासिक जीत ने साबित कर दिया है कि कन्नौज के लोग सिर्फ इत्र का कारोबार ही नहीं करते बल्कि इत्र की सुगंध के साथ पूरी दुनिया में मोहब्बत व भाईचारा भी फैलाते हैं। श्री अखिलेश यादव की जीत ने यह भी बता दिया है कि श्री यादव कन्नौज के लोगों के दिलों में बसते हैं।

यह किसी से छिपा नहीं है और कन्नौज के लोग बखूबी वाकिफ हैं कि कन्नौज के इत्र को बढ़ावा देने, कारोबार को और ऊंचाई पर ले जाने में समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव हमेशा प्रत्यनशील रहे। मुख्यमंत्री रहते हुए श्री अखिलेश यादव ने हमेशा ही कन्नौज के इत्र को बढ़ावा देने के लिए कई जतन किए।

अखिलेश यादव ही हैं जिन्होंने मुख्यमंत्री रहते हुए फ्रांस के विश्व प्रसिद्ध परफ़्यूम की राजधानी कहे जाने वाले शहर Grasse के साथ मिलकर Kannauj-Grasse समझौता किया था जिससे कि वैश्विक विशेषज्ञों के साथ मिलकर कन्नौज के इत्र को विश्वस्तर तक पहुंचाया जा सके। कन्नौज में एक इंटरनेशनल परफ़्यूम म्यूज़ियम और कन्नौज इंजीनियरिंग कॉलेज में परफ़्यूमरी के एक कोर्स की योजना भी श्री अखिलेश यादव के कन्नौज के इत्र से मित्रता की बानगी है।

बाद में जब भाजपा सरकार ने प्रतिशोध की भावना से कन्नौज में समाजवादी सरकार में हुए विकास कार्यों को रोका जिससे इत्र उद्योग पर ब्रेक लगा तो कन्नौज वालों को यह अखर गया। कन्नौज वाले मौके की तलाश में थे और यह अवसर उन्हें मिल गया श्री अखिलेश यादव के चुनाव मैदान में उतरते

'कन्नौज की खुशबू फिर वापस लाएंगे'

बुलेटिन ब्यूरो

कन्नौज में मिले जनता के प्यार, स्नेह व आशीर्वाद से भावुक हुए समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने कन्नौज के लोगों का अभार जताते हुए भरोसा दिलाया कि वह कन्नौज की खुशबू फिर वापस लाएंगे।

लोकसभा सीट से चुनाव जीतने के बाद श्री अखिलेश यादव 5 जून को कन्नौज पहुंचे। उनके आगमन की सूचना पाकर भारी संख्या में कार्यकर्ता व आमजन समाजवादी पार्टी के कार्यालय पर एकत्र हो गए थे। श्री अखिलेश यादव ने जिला निर्वाचन अधिकारी शुभ्रांत कुमार शुक्ल से जीत का प्रमाण पत्र हासिल किया। उनका कार्यक्रम बहुत व्यस्त था और उन्हें दिल्ली जाना था जहां पर चुनाव बाद इंडिया गठबंधन की पहली बैठक होने वाली थी मगर उन्हें बताया कि आमजन उनका इंतजार कर रहा है तो श्री अखिलेश यादव खुद को रोक नहीं सके और जनता का आभार जताने समाजवादी पार्टी के जिला कार्यालय पर पहुंच गए।

वहां उन्होंने भारी समर्थन के लिए जनता का अभिवादन किया और उनका आभार जताते हुए कन्नौज के विकास व यहां की सुगंध फिर वापस लाने का भरोसा जताया। उन्होंने कहा कि **कन्नौज की खुशबू को वह फिर से चमकाएंगे। कन्नौज की महान जनता का पैगाम, सौहार्दपूर्ण और सकारात्मक राजनीति के नाम है, वह इसे आगे बढ़ाएंगे।** श्री यादव जितनी देर कार्यालय पर रहे, उनके जिंदाबाद के नारे गूंजते रहे। प्यार, स्नेह देखकर श्री यादव कई बार भावुक भी हुए। इधर श्री अखिलेश यादव ने कन्नौज लोकसभा सीट से जीत हासिल करने के बाद करहल विधानसभा सीट से अपना इस्तीफा दे दिया है। उल्लेखनीय है कि संवैधानिक व्यवस्था के अंतर्गत किसी एक ही सदन का सदस्य रहा जा सकता है।

ही।

लोकसभा चुनाव 2024 में जब श्री अखिलेश यादव ने कन्नौज से नामांकन किया तो कन्नौज वालों में भरोसा जगा है कि इत्र का मित्र आ गया है तो अब कन्नौज के इत्र की सुगंध फिर दुनियाभर में बिखरेगी।

चूंकि श्री अखिलेश यादव ने अपना सियासी सफर कन्नौज से ही शुरू किया था और सन 2000 में यहीं से सांसद चुने गए थे इसलिए उनका भी कन्नौज से खासा लगाव रहा। वह कभी भी कन्नौज से दूर नहीं हुए। यही वजह है कि कन्नौज हमेशा ही उनके लिए अपना रहा। कन्नौज के लोगों ने हमेशा ही महसूस किया कि अखिलेश यादव उनके हमेशा ही करीबी हैं। अपनत्व की इसी भावना का नतीजा रहा कि जब नामांकन के बाद श्री अखिलेश यादव ने कहा कि कन्नौज की जो क्रान्ति है वह खुशबू की क्रान्ति है। भाजपा जिस पराजय की ओर जा रही है उसे कन्नौज क्रांति कहा जाएगा।

यह वाक्य, कन्नौज के लोगों के दिलों में उतर गया और उन्होंने चुनाव में कन्नौज क्रांति की इबारत लिख दी। कन्नौज के लोगों ने इत्र की सुगंध के साथ भाईचारा व मोहब्बत का पैगाम दुनियाभर में पहुंचाने के लिए श्री अखिलेश यादव को 1.70 लाख मतों के बड़े अंतर से जिताया। जनता ने उन्हें 52.74 प्रतिशत वोट दिया।

मैनपुरी में डिंपल की रिकॉर्ड तोड़ जीत

बुलेटिन ब्यूरो

मैनपुरी लोकसभा सीट पर समाजवादी पार्टी की प्रत्याशी श्रीमती डिंपल यादव ने अब तक की सर्वाधिक वोटों से जीत दर्ज कर मैनपुरी लोकसभा सीट पर एक नया रिकॉर्ड अपने नाम कर लिया है। वह मैनपुरी लोकसभा सामान्य निर्वाचन क्षेत्र से सर्वाधिक मत हासिल करने वाली पहली सांसद बनी हैं। अभी तक इस सीट पर सर्वाधिक वोट पाने का रिकॉर्ड नेताजी-मुलायम सिंह के नाम था।

आम चुनाव में इस बार श्रीमती डिंपल यादव ने नेताजी-मुलायम सिंह यादव के रिकॉर्ड को भी तोड़ दिया है। यह भी उल्लेखनीय है कि मैनपुरी निर्वाचन क्षेत्र में अब तक सर्वाधिक मत पाने वालों में सैफई परिवार ही रहा है।

लोकसभा चुनाव 2014 में नेताजी-मुलायम सिंह यादव ने मैनपुरी में सर्वाधिक 595918 वोट हासिल किए थे जबकि इस बार लोकसभा चुनाव 2024 में नेताजी की बहू श्रीमती डिंपल यादव ने 598526 वोट हासिल कर उस रिकॉर्ड को भी तोड़ दिया है। अब वह मैनपुरी से सबसे अधिक वोट पाने वाली सांसद बन गई हैं।

मैनपुरी लोकसभा क्षेत्र में अब तक तीन बार उपचुनाव हुए हैं। 2004 में नेताजी-मुलायम सिंह यादव ने मैनपुरी सीट से त्यागपत्र दिया था तो उनके भतीजे धर्मेंद्र यादव ने चुनाव लड़ा, तब धर्मेंद्र यादव ने 348999 वोट हासिल किए। 2014 में नेताजी-मुलायम सिंह यादव ने यह सीट छोड़ी तो अपने पौत्र तेज प्रताप यादव को मैदान में उतारा। तब, तेज प्रताप यादव को 653686 मत प्राप्त हुए।

2022 में नेताजी-मुलायम सिंह यादव के दिवंगत होने के बाद समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने धर्मपत्नी श्रीमती डिंपल यादव को प्रत्याशी बनाया तो उन्हें 618120 वोट हासिल हुए।

उपचुनाव में जब श्रीमती डिंपल यादव मैनपुरी से चुनाव मैदान में उतरीं थीं तो मैनपुरी की जनता ने उन्हें अत्यधिक समर्थन दिया था। उनकी सादगी, मृदुभाषी होने के कारण जनता ने उन्हें बहुत पसंद किया था और नेताजी की राजनीतिक विरासत उन्हें सौंपी थीं। श्रीमती डिंपल यादव की सरलता और सादगी मैनपुरी वालों को तब भी भायी थी और अब लोकसभा चुनाव 2024 के चुनाव में भी मैनपुरी की जनता ने उन्हें भरपूर समर्थन देते हुए उन्हें सर्वाधिक मत देकर यह भरोसा जता दिया है कि उनके लिए श्रीमती डिंपल यादव ही नेताजी की राजनीतिक वारिस हैं।

मैनुपरी की जनता का स्नेह व समर्थन ही है कि श्रीमती डिंपल यादव के नाम रिकॉर्ड मतों से जीत हुई है। साथ ही उनके नाम सर्वाधिक वोट से जीतने का एक रिकॉर्ड भी आ गया है।

चुनाव नतीजों के बाद डिंपल जी ने मैनपुरी में विभिन्न क्षेत्रों का दौरा कर लोगों के प्रति आभार जताया। उन्होंने कहा कि मैनपुरी की जनता ने उनके प्रति जो विश्वास जताया है उस पर वह खरा उतरने का पूरा प्रयास करेंगी और मैनपुरी के विकास के लिए कोई कसर नहीं छोड़ेंगी।

उभरे अखिलेश चमके अखिलेश

अरविन्द मोहन
लेखक, वरिष्ठ पत्रकार

राजनीति और चुनाव के लिए भितरघात कोई नई चीज नहीं है और हो सकता है कि उत्तर प्रदेश की 80 लोकसभा सीटों के हाल में संपन्न चुनाव में भाजपा के एकाध उम्मीदवार के साथ भितरघात हुआ भी हो, लेकिन इसे राज्य में भाजपा की राजनीतिक धुलाई का कारण नहीं माना जा सकता।

भितरघात करने वालों और उसमें भी सबसे ज्यादा गलत उम्मीदवार थोपने वालों की पहचान बहुत मुश्किल नहीं है। योगी और अमित शाह के रिश्तों का भी अंदाजा है ही। इसलिए जब केंद्र और राज्य दोनों जगह 'मजबूत' नेताओं वाली सरकार और डबल इंजन की सरकार के विकास के दावे के साथ सभी अस्सी सीटें जीतने के दावे से उतरी भाजपा समाजवादी पार्टी के हाथों मिली सबसे बड़ी और निर्णायक हार के बाद भितरघात का बहाना बनाती है तो इसके कारण अलग हैं।

इसका मुख्य कारण है सपा अध्यक्ष और देश की राजनीति में अचानक सबसे ज्यादा चमक हासिल करने वाले नेता अखिलेश यादव को उनकी सफलता और समझदारी के श्रेय से वंचित करना। भाजपा के लोग जमाने से कांग्रेस नेता राहुल गांधी को मजाक और उपहास का विषय बनाए हुए हैं। इस चुनाव में उन्होंने भी अपनी ताकत और क्षमता दिखाई है। लेकिन अखिलेश यादव पर अलग रणनीति अपनाई जा रही है। उनको श्रेय देने की उम्मीद तो इस भाजपा से नहीं की जा सकती लेकिन मोदी के उत्तराधिकारी या शाह योगी टकराव जैसी हल्की बातों से सपा को मिली सफलता की अनदेखी नहीं हो सकती।

समाजवादी पार्टी आज उत्तर प्रदेश की नंबर एक और देश की नंबर तीन पार्टी बन चुकी है। कांग्रेस जैसी सुप्त पड़ी पार्टी और तृणमूल कांग्रेस को साथ लेकर भी उसने भाजपा और उसके चार (जातिवादी) सहयोगियों को धूल चटा दी है। उसका वोट प्रतिशत जबरदस्त है। कुछ सीटों पर मतगणना और अधिकारियों की हेराफेरी से नतीजे प्रभावित हुए हैं, फिर भी सपा को अभी तक की सबसे बड़ी सफलता मिली है। इतनी लोकसभा सीटें उसने पहले कभी नहीं जीती थीं और शायद ही कभी कथित क्षेत्रीय दल ने जीती हैं। यह नतीजा तब है जब पार्टी कई मामलों में जेल, फावड़ा और वोट के पुराने लोहियावादी फार्मूले से भी हल्का अलग हुई है जिसे नेताजी मुलायम सिंह जोर-शोर से चलाया करते थे।

राहुल गांधी और प्रियंका भी उत्तर प्रदेश आए लेकिन कम और बाद के दौर में जब अमेठी और रायबरेली के चुनाव पास आ गए। अकेले अखिलेश यादव ने ही सारा बोझ उठाया और नरेंद्र मोदी, अमित शाह, योगी आदित्यनाथ और राजनाथ सिंह जैसों के धुआंधारऔर भरपूर साधनसंपन्न चुनाव अभियान का मुकाबला किया।

अखिलेश यादव ने अपनी रणनीति और अच्छे उम्मीदवारों के सहारे उनका अच्छा जवाब दिया। वे ही नहीं सपा के सारे कार्यकर्ताओं ने इंडिया गठबंधन के उम्मीदवारों को जिताने में अपनी तरफ से कोई कोर कसर नहीं छोड़ी।

यह भी हुआ कि 'इंडिया' गठबंधन के अपने सहयोगी दलों को उदारता से सीटें देने के बाद भी अखिलेश यादव या सपा ने कभी भी इस बात के लिए कोई दबाव नहीं बनाया कि उनके हिस्से की किस सीट से कौन उम्मीदवार हो। कांग्रेस ने कभी शिकायत नहीं की कि सपा की तरफ से कोई अनुचित दबाव आया। कई राज्यों में सीनियर पार्टनर से ऐसी शिकायत आई है।

अगर कोई दबाव आया तो सिर्फ कन्नौज से अखिलेश यादव के चुनाव मैदान में उतरने के फैसले से। इसका दबाव राहुल गांधी पर पड़ा और वे रायबरेली से चुनाव लड़ने आए। और इन दोनों के चुनाव मैदान में आने का असर

'इंडिया' गठबंधन के बाकी उम्मीदवारों पर क्या पड़ा यह हर किसी ने महसूस किया। अब राहुल गांधी भी कबूल करते हैं कि अगर प्रियंका बनारस से लड़ जाती तो मोदी जी के लिए भी मुश्किल हो जाती।

वैसे अजय राय ने भी उन्हें अच्छी टक्कर दी और इसमें सपा के लोगों का सौ फीसदी सहयोग रहा।

लोकसभा चुनाव में अखिलेश यादव का मुख्य काम था एक नई सोशल इंजीनियरिंग करना जिससे न सिर्फ भाजपा पस्त हुई बल्कि बाद के दौर में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, भाजपा और संघ परिवार के लाख जोर लगाने के बावजूद चुनाव पर सांप्रदायिक रंग नहीं चढ़ सका। ऐसा प्रयोग लालू यादव और तेजस्वी यादव नें भी थोड़े अलग रूप और तरीके से बिहार में किया लेकिन अमल में लाने में अखिलेश जैसी कुशलता न होने से वह उतनी सफल नहीं हुई। उसने भी भाजपा को परेशान किया, सीटें घटाईं लेकिन यूपी जैसा असरदार नहीं हुआ।

यह इंजीनियरिंग थी 'पीडीए' अर्थात पिछड़ा, अल्पसंख्यक और दलित गठजोड़ का। प्रधानमंत्री भी अपनी असंख्य बातों में चार नई जातियों की चर्चा करते थे लेकिन उम्मीदवार बनाते समय सब भूल गए। अखिलेश यादव PDA के नए नारे के साथ निरंतर उम्मीदवारों को लेकर भी हिसाब लगाते रहे। कई बार इस चक्कर में उम्मीदवार बदलने पड़े। एक सीट पर कई-कई उम्मीदवार आए गए भी।

लेकिन अंत में अयोध्या और मेरठ जैसे महत्वपूर्ण सीटों से दलित उम्मीदवार देने का अद्भुत फैसला हुआ जिसमें से फैजाबाद से वरिष्ठ और अनुभवी अवधेश प्रसाद की जीत ने मोदी और संघ परिवार की सारी नौटंकी की पोल खोल दी। मेरठ में भी विवादास्पद ढंग से टीवी के राम अरुण गोविल को जीता घोषित किया गया।

पर यह सोशल इंजीनियरिंग सिर्फ कुछ सीटों के लिए नहीं हुई। यह पूरे प्रदेश के लिए हुई। मुरादाबाद से नए और हिन्दू उम्मीदवार उतारे गए। जो चुनाव जीते भी। अति पिछड़ों, खासकर निषाद, राजभर और मौर्य/कुशवाहा को ज्यादा अवसर दिया गया।

उत्तर प्रदेश के इस चुनाव परिणाम से अखिलेश यादव मुल्क में भाजपा विरोधी राजनीति का एक नया ध्रुव बनकर उभरे हैं। उन्होंने खासकर सेक्युलर और समाजवादी राजनीति, तथा व्यवहार में ज्यादा घालमेल नहीं किया है। उन्होंने अपने सिद्धांत और व्यवहार में स्पष्टता रखते हुए काम किया है।

कहना न होगा कि इन सब में कांग्रेस के साथ होने का लाभ मिला क्योंकि मुसलमानों से जुड़े सवालों पर अकेले वही पार्टी लगातार तनकर साथ खड़ी रही थी। उसके अलग होने से मुसलमान मतदाताओं के मन में दुविधा रहती। दूसरा लाभ बसपा नेत्री मायावती ने खुद को भाजपा एजेंट जैसा बनाकर दे दिया। बसपा ने बड़ी संख्या में मुसलमान उम्मीदवार उतारे लेकिन वे ज्यादा नुकसान नहीं कर पाए। पर यह अनुमान भी है कि करीब डेढ़ दर्जन सीटों पर इंडिया गठबंधन के उम्मीदवार उसकी वजह से जीत न पाए।

बीच चुनाव में अपने घोषित उत्तराधिकारी आनंद को मैदान से हटाकर उन्होंने रही सही कसर भी पूरी कर दी। और चार सौ पार के भाजपाई नारे, और संविधान संशोधन की धमकियों ने दलितों के मन में वास्तविक डर पैदा किया। मुसलमानों के साथ दलितों के आ जाने से अखिलेश यादव की नई सोशल इंजीनियरिंग पूरी हो गई।

यहां हम चाहें तो बाबरी मस्जिद विध्वंस के बाद हुए उत्तर प्रदेश में हुए विधानसभा चुनाव को याद कर सकते हैं। तब समाजवादी नेता किशन पटनायक की एक भविष्यवाणी ने सबको चौंका दिया था कि अगर मुलायम सिंह और कांशीराम साथ आ जाएं तो भगवा उफान पर रोक लग सकती है।

हुआ भी यही और भाजपा बुरी तरह हारी थी। इस बार बसपा साथ नहीं आई लेकिन बसपा का आधार वोट खिसकाने का काम अखिलेश यादव ने कर लिया। मुसलमानों के लिए तो नहीं लेकिन दलित वोटों के लिए भाजपा ने भी कम मेहनत नहीं की थी। पिछले चुनाव में उसे गैर-जाटव दलित वोट मिले भी थे। लेकिन इस बार अखिलेश यादव की सोशल इंजीनियरिंग ने किसी की नहीं चलाने दी है।

अब जो सच्चाई सामने आई है वह सिर्फ जीतने वाले उम्मीदवारों की संख्या भर का नहीं है। सीएसडीएस के पोस्ट पोल सर्वेक्षणों से जाहिर होता है कि इस बार किसी भी चुनाव की तुलना में सपा को यादव,

मुसलमान और दलित वोट ज्यादा मिले हैं। अगड़ों का वोट पाने में उसे दिक्कत नहीं हुई है लेकिन गैर यादव पिछड़ा समाज का भी ज्यादा हिस्सा उसके साथ रहा है। महिला मतदाता भी भाजपा से छिटके हैं। अर्थात अखिलेश यादव की सोशल इंजीनियरिंग सफल रही है।

इस बात का एक और प्रमाण नरेंद्र मोदी के नए मंत्रिमंडल का सामाजिक समीकरण है। उनका मुसलमान और महिला विरोधी चेहरा तो ज्यादा उजागर हुआ है लेकिन हर मंत्री को उसकी जाति देखकर ही मंत्रालय देना, मंत्रिमंडल में लेना अचानक नहीं हुआ है क्योंकि नरेंद्र मोदी तो जाति में विश्वास न करने का मंत्र उच्चारण करते रहे हैं।

संगठन और प्रदेशों के नेता चुनने में भी सामाजिक समीकरण सर्वाधिक प्रभावी रहा है। पर वे नहीं जानते कि जाति का विमर्श सांप्रदायिक विमर्श को खुद से काट देता है। भाजपा अखिलेश के मंत्र से उनको नहीं मात दे सकती।

उत्तर प्रदेश के इस चुनाव परिणाम से अखिलेश यादव मुल्क में भाजपा विरोधी राजनीति का एक नया ध्रुव बनकर उभरे हैं। उनका सिर्फ अपने चुनावी साझीदार के साथ ही नहीं इंडिया गठबंधन के सभी नेताओं और नीतीश कुमार, चंद्रबाबू नायडू तथा चंद्रशेखर राव जैसे सभी लोगों के साथ बहुत अच्छा संबंध है।

जैसे ही भाजपा बहुमत से दूर रही और नायडू-नीतीश के सहारे सरकार बनाने की स्थिति बनी इन नेताओं के साथ सबसे आत्मीय संबंध बताने वाली अखिलेश यादव की तस्वीरें ही सबके लिए चर्चा का विषय बनीं।

ऐसा इसलिए भी हुआ है कि भले ही अखिलेश यादव ने ऊपरी तौर पर ज्यादा सक्रियता न दिखाई हो, सड़क पर उतरकर आंदोलन कम किए हों लेकिन सिद्धांतों, खासकर सेक्युलर और समाजवादी राजनीति, तथा व्यवहार में ज्यादा घालमेल नहीं किया है। न ज्यादा महत्वाकांक्षा दिखाई है न आपसी व्यवहार में ज्यादा लटको झटकों वाला आचरण किया है। उन्होंने अपने सिद्धांत और व्यवहार में स्पष्टता रखते हुए काम किया है।

'बहुजन समाज' की नई श्रेणी है PDA

अरुण कुमार त्रिपाठी
वरिष्ठ पत्रकार

उत्तर प्रदेश की जनता और समाजवादी पार्टी ने उन लोगों को करारा जवाब दे दिया है जो यह मानने लगे थे कि यह प्रदेश पूरी तरह से सांप्रदायिक हो चुका है। 2024 के चुनाव परिणामों ने साबित कर दिया है कि सांप्रदायिकता से लड़ने में समाजवादी सबसे आगे रहेंगे। तमाम प्रतिकूलताओं के बावजूद समाजवादी पार्टी ने उत्तर प्रदेश में 37 सीटें जीतकर यह सिद्ध कर दिया है। इतना ही नहीं समाजवादी पार्टी ने 37 सीटें जीतकर अधिनायकवाद को भी वैसाखी पर तो ला ही दिया है।

सांप्रदायिकता से समाजवादी ही लड़ेंगे इस आशावादी दावे के दो अहम हिस्से हैं। एक तो समाजवादी विचारधारा और दूसरे समाजवादी रणनीति। अगर उत्तर प्रदेश में समाजवादी पार्टी ने `इंडिया' (इंडियन नेशनल डेवलपमेंटल इन्क्लूसिव अलायंस) का हिस्सा बनकर 37 सीटें जीतीं तो समाजवादी विचारधारा को अपनाकर कांग्रेस ने भी छह सीटें हासिल कीं।

समाजवादी विचारधारा का ही असर है कि `इंडिया' को देश भर में 234 सीटें हासिल हुईं। यह ठीक है कि बिहार में राष्ट्रीय जनता दल को महज चार सीटें मिल पाईं तो देश भर में वामपंथी दलों को कुल 8 सीटें ही मिलीं। लेकिन यह बात नहीं भूलनी चाहिए कि 99 सीटें पाने वाली कांग्रेस पार्टी ने भी अपने घोषणा पत्र में समाजवादी कार्यक्रमों को ही स्थान दिया था।

चाहे अग्नवीर योजना समाप्त करने की बात हो, 30 लाख नौकरियां देने की बात हो,जाति जनगणना और संपत्ति सर्वेक्षण की बात हो, बेरोजगारों को अप्रेंटिस कराने और हर गरीब परिवार की महिला को सालाना एक लाख रुपए देने की बात हो, यह सब सामाजिक न्याय के ही हिस्से हैं और सामाजिक न्याय ही वास्तव में समाजवाद है। पश्चिम बंगाल में तृणमूल कांग्रेस को मिलने वाली 29 सीटें भी समाजवादी और धर्मनिरपेक्ष नीतियों पर ही चल कर हासिल हो सकी हैं। महाराष्ट्र विकास अघाड़ी भी इस परिभाषा से अलग नहीं है।

असली सवाल है विचारधारा और उसे वहन करने वाली रणनीति का। समाजवादी पार्टी ने इस मामले में देश के तीसरे सबसे बड़े दल के रूप में उभर कर यह साबित कर दिया है कि उसके पास विचारधारा की शक्ति है तो रणनीतिक कौशल भी। उसके पास दृष्टिसंपन्न युवा नेतृत्व है तो संविधान और लोकतंत्र के प्रति गहरी आस्था भी है। इसलिए यह कहने में अतिश्योक्ति नहीं है कि समाजवादी पार्टी ने अखिलेश यादव के नेतृत्व में तीन बड़े मोर्चों पर सफलता हासिल की है और भविष्य में उस पर चलने की राह दिखाई है।

इसमें पहला मोर्चा था तानाशाही का। दूसरा मोर्चा था हिंदू कट्टरता के साथ बढ़ती नफरत और सांप्रदायिकता का। तीसरा मोर्चा था जातिगत कट्टरता का जिसके तहत पिछड़ों और दलितों को बांटकर उनकी राजनीतिक और वैचारिक शक्ति को कमजोर किया जा रहा था और उन्हें हीन समझने की सदियों पुरानी सोच को जारी रखने की योजना थी।

डॉक्टर भीमराव आंबेडकर कहते थे कि किसी भी विचारधारा का महत्त्व तभी तक है जब तक उसका वहन करने वाले संगठन और नेता हों। यानी अगर किसी विचार की आत्मा को स्वस्थ और मजबूत शरीर नसीब नहीं होता तो वह विचार मर जाता है।

उसी के लिए डॉक्टर राम मनोहर लोहिया ने अपनी सोशलिस्ट पार्टी आफ इंडिया का डॉ भीमराव आंबेडकर की रिपब्लिकन पार्टी के साथ तालमेल करने का असफल प्रयास किया था और डॉ आंबेडकर के निधन के बाद कहा था कि वे इस देश में महात्मा गांधी के बाद सबसे बड़े व्यक्ति थे और उनके होने से यह विश्वास होता था कि एक दिन इस देश में जाति व्यवस्था समाप्त जाएगी।

समाजवादी पार्टी ने उसी संकल्प और विचार को पूरा करने के लिए पीडीए नामक रणनीति का निर्माण किया। पीडीए यानी पिछड़ा, दलित और अल्पसंख्यक। लेकिन बाद में इसे नए किस्म का अर्थ विस्तार मिला और कुछ व्याख्याकर्ताओं ने इसमें `ए' का अर्थ आधी आबादी से भी लगाया।

इसके अतिरिक्त पीडीए को प्रोग्रेसिव डेमोक्रेटिक अलायंस कहने वालों की भी कमी नहीं थी। वास्तव में `पीडीए' मुलायम सिंह यादव के `एमवाई' समीकरण का ही विस्तार था। लेकिन अगर ध्यान से देखा जाए तो यह `बहुजन समाज' की एक नई श्रेणी है जिसकी कल्पना महात्मा ज्योतिबा राव फुले, डा आंबेडकर और कांशीराम ने की थी। या फिर जिसकी कल्पना भगवान बुद्ध ने की थी। डा लोहिया ने भी इसी के लिए नारा दिया था कि `समाजवादियों ने बांधी गांठ पिछड़ा पावै सौ में साठ'।

1993 में मुलायम और कांशीराम ने जिस गठजोड़ की रणनीति के माध्यम से बाबरी मस्जिद विध्वंस करने वाली भाजपा को उत्तर प्रदेश की सत्ता से रोक दिया था यह रणनीति उसी का नया रूप थी।

कहा जा सकता है कि जो काम मुलायम और कांशीराम ने बीसवीं सदी में किया था वह काम अखिलेश यादव और राहुल गांधी ने इक्कीसवीं सदी में कर दिया।

सांप्रदायिक अयोध्यावादियों ने अयोध्यावासियों का जीना दुष्वार कर दिया। इसलिए अयोध्यावासियों ने अपनी प्रतिक्रिया में भाजपा को हरा दिया

फैजाबाद की सीट पर हार को कारण भाजपा और उसके हिंदुत्ववादी आख्यान की जो किरकिरी हुई उसकी तीखी प्रतिक्रिया सोशल मीडिया पर देखी जा रही है। फैजाबाद सीट की हार सीने में चुभे हुए तीर की तरह से है इसलिए कट्टर हिंदुत्ववादी हिंदुओं को गद्दार बता रहे हैं। वे आह्वान कर रहे हैं कि अयोध्या जाइए तो वहां के स्थानीय लोगों से कोई सामान न खरीदिए। वहां का प्रसाद भी न लीजिए। क्योंकि वहां के लोगों ने भाजपा नहीं राम के साथ गद्दारी की है।

ऐसा आह्वान करने वाले लोग यह भूल रहे हैं कि फैजाबाद सीट पर हिंदुत्व ने जो रामलीला करने की कोशिश की वह दरअसल मर्यादा पुरुषोत्तम राम के आचरण और आदर्शों से कहीं मेल खाने वाली नहीं थी। वह लीला संविधान के धर्मनिरेपेक्ष चरित्र को कूड़ेदान में फेंककर प्रधानमंत्री मोदी ने रची थी। उसमें धर्म और धर्माचार्यों की मर्यादा का पालन भी नहीं किया गया और अधूरे राम मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा की गई। हजारों अयोध्यावासियों की दुकानें और घर तोड़े गए और उन्हें मुआवजा और वैकल्पिक रोजगार नहीं मिला। एक तरह से गुजरात और देश के दूसरे हिस्सों से आए सांप्रदायिक अयोध्यावादियों ने अयोध्यावासियों का जीना दुष्वार कर दिया। इसलिए अयोध्यावासियों ने अपनी प्रतिक्रिया में भाजपा को हरा दिया। वास्तव में भाजपा धर्म और राजनीति का अविवेकी मिलन कर रही है और उससे धर्म को भ्रष्ट और राजनीति को कलही बना रही है।

फैजाबाद की सामान्य सीट से एक दलित प्रत्याशी को उतार कर समाजवादी पार्टी ने एक बेहद कुशल और साहसिक रणनीति का परिचय दिया। संयोग से वहां से भाजपा के सांसद और उम्मीदवार लल्लू सिंह ने यह कह कर सपा और कांग्रेस के आख्यान को सही साबित कर दिया कि अबकी बार चार सौ पार का मकसद संविधान को बदल देना है।

दलित और पिछड़ी जनता समझ गईं कि राममंदिर की प्राण प्रतिष्ठा तो एक बहाना थी, असली योजना तो संविधान और लोकतंत्र को नष्ट करने की है। फैजाबाद सीट का परिणाम पीडीए फार्मूले का लिटमस टेस्ट था और समाजवादी पार्टी उसमें पास हुई। सपा ने फैजाबाद सीट पर भाजपा को हराकर यह

दिखा दिया है कि कॉरपोरेट हिंदुत्व अजेय नहीं है। उसे उसके गढ़ में ही हराया जा सकता है।

इस राष्ट्रीय महत्त्व की सीट पर सपा की विजय का यही संदेश गया है कि बहुजन समाज के वोटों का विभाजन अगर रोका जा सके और उसे समाजवाद, लोकतंत्र और धर्मनिरपेक्षता की समझदारी भरी विचारधारा से जोड़ा जा सके तो अधिनायकवाद और हिंदुत्व दोनों को हराया जा सकता है और उस कॉरपोरेट घमंड को भी चकनाचूर किया जा सकता है जो लोगों की धार्मिक भावनाओं का दोहन करके देश के संसाधनों को लूटना और उस पर कब्जा करना चाहता है।

हालांकि जब समाजवादी पार्टी के प्रमुख अखिलेश यादव ने पीडीए का नारा दिया तब पार्टी के ही कई नेताओं को लग रहा था कि उनके संगठन ने सवर्णों के विरुद्ध गोलबंदी कर ली है। इससे नुकसान हो जाएगा। लेकिन जैसे जैसे यह रणनीति परवान चढ़ने लगी वैसे वैसे अखिलेश यादव और राहुल गांधी की निकटता बढ़ने लगी और बदलने लगा चुनाव का रुख। जिस पीडीए को लोग धूल समझते थे वह अंतिम चरण तक आते आते तूफान बनकर छा गया।

जब लोग उसकी झलक फूलपुर और इलाहाबाद जैसे शहरों में अखिलेश यादव और राहुल गांधी की संयुक्त रैलियों में देख रहे थे तो उन्हें यकीन नहीं हो रहा था कि क्या कमाल हो रहा है। युवाओं की उमड़ती भीड़ ने प्रियंका गांधी और डिंपल यादव का भी बनारस में भव्य स्वागत किया। इंडिया समूह ने संसाधनों की विहीनता और सरकारी तंत्र की प्रतिकूलता का जवाब अपनी विचारधारा, लोकतांत्रिक निष्ठा और कड़ी मेहनत से दिया।

समाजवादी पार्टी के सामने एक कठिन चुनौती थी कि भाजपा के अल्पसंख्यक तुष्टीकरण के आरोप से कैसे बचा जाए। इसके लिए उसने मुसलमानों को चार टिकट तो दिए लेकिन सभी मुस्लिम नेताओं को विवादास्पद बयानों से दूर रहने को कहा। इसीलिए सपा के टिकट पर लड़ने वाले चारों अल्पसंख्यक उम्मीदवार जीत गए। हालांकि प्रधानमंत्री मोदी ने भड़काने में कोई कसर नहीं छोड़ी। उन्होंने तमाम विवादास्पद बयान दिए। फिर भी सपा ने अपने मुस्लिम नेताओं और मतदाताओं को कोई प्रतिक्रिया करने से रोक रखा था। यानी भाजपा और मोदी की ध्रुवीकरण की रणनीति बेकार हो गई।

सपा के सामने दूसरी बड़ी चुनौती यह थी कि जो गैर-यादव अन्य पिछड़ा वर्ग का मतदाता है वह कैसे सपा को अपनी पार्टी समझे और यादवों के प्रभुत्व वाले हौवे से मुक्त होकर सपा का दामन थामे। इसके लिए सपा ने

चुनाव मैदान में 32 ओबीसी प्रत्याशी उतारे जिसमें यादव सिर्फ पांच थे। बाकी 27 प्रत्याशी दूसरी पिछड़ी जातियों से थे और इस तरह उन सभी जातियों का एक विश्वास सपा में बना।

इन जातियों में कुर्मी, कुशवाहा, शाक्य, मौर्य, निषाद, बिंद, जाट, गुर्जर, राजभर, पाल और लोध प्रमुख हैं। सपा के ओबीसी उम्मीदवारों की विजय दर 70 प्रतिशत से ऊपर रही। यानी 32 उम्मीदवारों में से 21 उम्मीदवार जीते। कहने का अर्थ है कि अति पिछड़ी जातियों में भाजपा की सोशल इंजीनियरिंग वाला पुल टूट गया और सपा की समाजवादी धारा उन्हें अपने साथ ले जाने में प्रबल साबित हुई।पीडीए की सफलता का प्रमाण इस बात से मिलता है कि समाजवादी पार्टी के 86 प्रतिशत विजयी सांसद इसी श्रेणी के हैं।

एक और बड़ी चुनौती दलितों को अपनी ओर खींचने की थी। अखिलेश यादव ने 2019 में बहुजन समाज पार्टी के साथ गठबंधन किया था लेकिन उसका लाभ बसपा को ज्यादा हुआ था। बसपा को 10 सीटें तो सपा को महज पांच सीटें मिली थीं। यानी सपा का पिछड़ा वोट तो बसपा को गया था लेकिन बसपा का दलित वोट सपा को नहीं मिला था। उसके बाद बसपा नेता मायावती ने न तो अधिनायकवाद के विरुद्ध कोई साहसिक रुख दिखाया और न ही संविधान की रक्षा का संकल्प जताया।

यह बातें बसपा के पढ़े लिखे मतदाता को अखर गईं। जब देश में सारा विपक्ष लोकतंत्र और संविधान खत्म होने का हाहाकार मचा रहा है तो मायावती इतनी खामोश क्यों हैं। बल्कि उन्होंने इन मुद्दों पर भाजपा सरकार की कड़ी आलोचना करने वाले अपने अपने भतीजे आकाश आनंद को प्रभारी पद से ही हटा दिया और उन्हें अपरिपक्व कहते हुए भाजपा से अच्छे संबंध बनाए रखने में लगी रहीं।

इसलिए बसपा का पढ़ा लिखा और जागरूक मतदाता `हाथी' छोड़कर `साइकिल' और `पंजे' की ओर मुड़ा। उसने कहना शुरू किया कि बहन जी की राजनीति कुछ समझ में नहीं आती और वे इस बार जीत भी नहीं रही हैं इसलिए वोट `इंडिया' को जाना चाहिए। इस बात पर आरंभ में लोगों को यकीन नहीं हो रहा था। लोग बड़े दबे स्वर में कह रहे थे कि ज्यादा से ज्यादा पांच छह प्रतिशत दलित वोट इंडिया(सपा) को जाएगा। लेकिन जब दलितों ने बाबा साहेब के संविधान बचाने की ठानी तो उनका झुकाव आंधी की रफ्तार से सामने आया।

सपा ने 15 दलितों को टिकट दिया था जिनमें से 8 दलित विजयी हुए। यह स्ट्राइक रेट पचास प्रतिशत से ज्यादा था। सपा ने भी दिल खोलकर उनका स्वागत किया और कांशीराम से प्रभावित होते हुए फैजाबाद और मेरठ की सामान्य सीट पर दलित उम्मीदवार उतार दिए। हालांकि मेरठ सीट पर सपा जीत नहीं पाई लेकिन उसने भाजपा के फिल्मी राम के छक्के छुड़ा दिए।

सपा ने सवर्ण समाज की उपेक्षा की हो ऐसा नहीं है। समाजवादी पार्टी ने 11 सवर्णों को टिकट दिया था। जीत का सर्वाधिक अनुपात क्षत्रिय समाज का रहा जिनके दो में से दोनों उम्मीदवार विजयी हुए। जबकि चार ब्राह्मण उम्मीदवारों में से एक जीता, यानी 25 प्रतिशत स्ट्राइक रेट रहा। अगर बलिया की सीट पर सनातन पांडेय को विजय हासिल हुई तो धौरहरा सीट पर क्षत्रिय बिरादरी के उम्मीदवार आनंद भदौरिया को विजय मिली।

अखिलेश यादव ने 2004 में नेताजी मुलायम सिंह के नेतृत्व मेंसमाजवादी पार्टी का 35 सीटों का रिकार्ड तोड़कर यह बता दिया है कि उनमें अतीत की समझ है और वर्तमान पर पकड़ है। इसी मजबूती के दम पर वे भविष्य की ओर देख पाने में समर्थ हैं। समाजवादी पार्टी ने उत्तर प्रदेश में आधी से ज्यादा सीटों पर भाजपा को परास्त करके देश की राजनीति को फिर गठबंधन की दौर में वापस ला दिया है। उसने कांशीराम की उस इच्छा को पूरा कर दिया है कि हमें मजबूत नहीं मजबूर सरकार चाहिए। यह लोकतांत्रिक राजनीति द्वारा अधिनायकवाद का गिरेबान पकड़ लेने जैसा काम है।

अपने समय में डा लोहिया और जेपी हिंदू समाज के भीतर चलने वाली उदारता और कट्टरता की लड़ाई के तहत उसमें उथल पुथल करना चाह रहे थे। वे उस समय के अधिनायकवाद और भ्रष्टाचार से लड़ रहे थे और तब सांप्रदायिकता का राक्षस इतने बड़े पैमाने पर खड़ा नहीं हुआ था। लेकिन पूरे नब्बे के दशक से लेकर आज तक सांप्रदायिकता से लड़ने के काम में मुलायम सिंह, लालू प्रसाद, अखिलेश और तेजस्वी ने शानदार भूमिका निभाई है।

सपा के नए प्रदेश अध्यक्ष ने कार्यभार संभाला

बुलेटिन ब्यूरो

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने प्रदेश उपाध्यक्ष रहे श्री श्याम लाल पाल को समाजवादी पार्टी का नया प्रदेश अध्यक्ष नियुक्त किया है। श्री पाल ने श्री नरेश उत्तम पटेल का स्थान लिया है। श्री नरेश उत्तम पटेल लोकसभा चुनाव 2024 में सांसद निर्वाचित हुए हैं। प्रयागराज जनपद निवासी श्री श्याम लाल पाल समाजवादी पार्टी में महासचिव व उपाध्यक्ष पद पर रह चुके हैं।

लोकसभा चुनाव 2024 में फतेहपुर से समाजवादी पार्टी के प्रत्याशी के तौर पर चुनाव में व्यस्तता के कारण श्री नरेश उत्तम पटेल ने पद से मुक्त करने का अनुरोध किया था जिसके बाद राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने प्रदेश कार्यकारिणी में उपाध्यक्ष श्री श्याम लाल पाल को नए प्रदेश अध्यक्ष की जिम्मेदारी सौंपी। उन्होंने अपना कार्यभार संभाल लिया है। प्रयागराज जनपद के मोहिउद्दीनपुर निवासी श्री श्याम लाल पाल जनसेवा इंटर कालेज मोहिउद्दीनपुर के प्रधानाचार्य पद से सेवानिवृत्त होने के बाद से ही राजनीति में सक्रिय हैं। 2007 से वह समाजवादी पार्टी से जुड़े हुए हैं।

चौधरी चरण सिंह को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित

बुलेटिन ब्यूरो

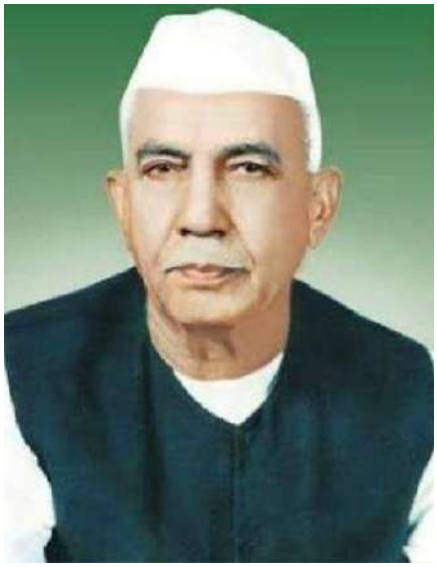

भारत रत्न पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह की 37वीं पुण्यतिथि पर 29 मई को समाजवादी पार्टी ने पूरे प्रदेश में कार्यक्रम आयोजित कर भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने श्रद्धांजलि व्यक्त करते हुए कहा कि चौधरी साहब देश के किसानों के सबसे बड़े नेता रहे। उन्होंने जीवन भर किसानों के लिए संघर्ष किया। समाजवादी पार्टी चौधरी चरण सिंह के बताए रास्ते पर चलकर किसानों को न्याय दिलाने के लिए संघर्षरत रहेगी।

समाजवादी पार्टी के राज्य मुख्यालय पर पूर्व विधानसभा अध्यक्ष माता प्रसाद पांडेय एवं समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय सचिव राजेन्द्र चौधरी ने माल्यार्पण कर चौधरी साहब को नमन किया। कार्यक्रम में वक्ताओं ने कहा कि समाजवादी पार्टी हमेशा चौधरी साहब के विचारों से ही अनुप्राणित रही है और उनके रास्ते पर चलती रहेगी।

अहिल्याबाई होल्कर को याद किया

बुलेटिन ब्यूरो

वीरांगना रानी अहिल्याबाई होल्कर की 299वीं जयंती को समाजवादी पार्टी ने सादगी से मनाया। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने रानी अहिल्याबाई होल्कर के चित्र पर माल्यार्पण कर नमन किया।

31 मई को समाजवादी पार्टी के राज्य मुख्यालय पर आयोजित कार्यक्रम में श्री अखिलेश यादव ने रानी अहिल्याबाई होल्कर को श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए कहा कि उनका जीवन संघर्षो से भरा था। उन्होंने राज्य पर आक्रमण करने वालों से जमकर लोहा लिया।

महिला सेना की स्थापना की। उन्होंने काशी विश्वनाथ मंदिर का जीर्णोद्धार किया। मणिकर्टिका घाट को संवारा। मंदिर, बावड़ी, धर्मशाला के निर्माण के साथ लड़कियों की शिक्षा का विस्तार किया। निराश्रितों को मदद पहुंचाई। बड़ी कुशलता से उन्होंने प्रशासन भी संभाला था।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि रानी अहिल्याबाई होल्कर ने अन्याय के खिलाफ जो संघर्ष किया वह हमें भी प्रेरणा देता है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता समाजवादी पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष श्याम लाल पाल व संचालन त्रिवेणी पाल ने किया।

साफ़ और बेबाक

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

Socialist Leader of India. Chief Minister of UP (2012 - 2017)

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

नेताजी को समर्पित ये ऐतिहासिक जीत!

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

2024 के चुनाव में समाजवादी पार्टी एक राजनीतिक दल से अधिक एक 'सामाजिक एकजुटता का सकारात्मक आंदोलन' बनकर उभरी है। समाज के हर वर्ग और तबके ने सपा को वोट देकर भविष्य की राजनीति की दिशा केवल उप्र ही नहीं बल्कि पूरे देश में बदल दी है। PDA का सामाजिक समरसता का संदेश 'न्यू इंडिया' के लिए नया पैग़ाम है। अब इस चेतना और जागृति का राष्ट्रव्यापी विस्तार होगा और सामाजिक न्याय की मुहिम अपनी मंज़िल की ओर बढ़ती दिखेगी।

संविधान, लोकतंत्र, आरक्षण, समता-समानता, सौहार्द की रक्षा करता इंडिया गठबंधन समय के साथ-साथ बढ़ते हुए जनसमर्थन के आधार पर और भी शक्तिशाली होगा, जो शोषित, वंचित, पीड़ित के लिए मज़बूत ढाल बनेगा।

जय हिंद!

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

एक देश, एक ही माँग
रद्द हो NEET एग्जाम

#NEET
#RENEET
#neetscam
#neetscam2024
#NEETfraud
#neet2024
#NEET_reconduct
#medical

Akhilesh Yadav @yadavakhil... · 10 Jun

कुछ चुनाव नक़्शा बदल देते हैं!

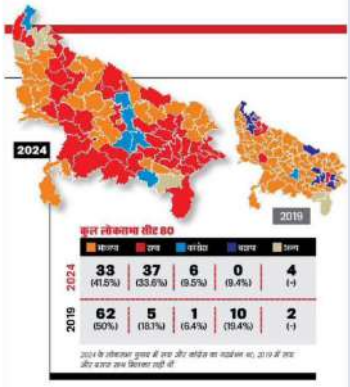

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

जितनी ऊँचाई पर जाकर कटती है पतंग
उतना ही बड़ा होता है उसका पतन

भाजपा कई दोषों के लिए ज़िम्मेदार है :

Translate post

Akhilesh Yadav @yadavakhilesh · 20m

अगर भाजपा सरकार ने फाइलों की जगह ज़मीन में पेड़ लगाए होते तो शायद भीषण गर्मी से जनता का कुछ बचाव हो सकता था। पता करना पड़ेगा कि जहाँ से पेड़ की सप्लाई हुई, भाजपा ने क्या वहाँ से भी चुनावी चंदा लिया है।

भाजपा का नारा है: जहाँ धंधा, वहाँ चंदा।

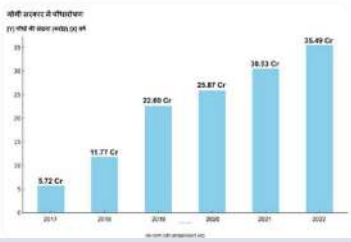

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

भाजपाई राजतंत्र के प्रतीक 'सेंगोल' को फिर से स्थापित करना चाहते हैं, उसके विपरीत इंडिया गठबंधन लोकतंत्र के प्रतीक 'संविधान' को फिर से स्थापित करना चाहता है।

'संविधान' लोकतंत्र की संजीवनी रहा है और हमेशा रहेगा।

Translate post

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

Modi lost self-confidence, faltering in speeches, says Akhilesh Yadav

PRESS TRUST OF INDIA
BALLIA, MAY 26

PRIME MINISTER Narendra Modi has lost self-confidence and has been faltering in his speeches upon realising the BJP will not retain power at the Centre, Samajwadi Party (SP) chief Akhilesh Yadav claimed on Sunday.

He described the BJP's allegation that if the INDIA bloc forms government at the Centre it will put "Babri lock" at the Ramtemple as a "dishonour" of the Supreme Court's decision.

Asserting that the INDIA bloc will form government after June 4, the day the votes will be counted, Yadav claimed that along with the Union cabinet, the media will also change.

At an election rally in favour of his party's Salempur candidate Ram Shankar Vidyarthi, the SP chief promised that the Agniveer scheme would be scrapped if the INDIA bloc forms government.

SP chief Akhilesh Yadav in Salempur on Sunday. PTI

Hitting out at PM Modi, Yadav said, "When self-confidence is lost, speech falters. He has realised his government is going. Modi can see the PM's post slipping away from him. The victory wave that started in western Uttar Pradesh has reached the seventh phase. Those who gave the '400-paar' slogan are going to be defeated."

Claiming that people's anger against the BJP is at its peak, Akhilesh said, "The country's 140 crore people will make the BJP yearn for even 140 seats... The Modi government has waived industrialists' loans worth more than Rs 25 lakh crore. The INDIA bloc government will waive the loans of farmers and implement MSP for them."

Later, at a press conference, when was asked about Chief Minister Yogi Adityanath's allegation that the INDIA bloc would implement Sharia law if voted to power, the Samajwadi Party chief did not reply to it. He mocked Adityanath saying, "Yogi ji is not a yogi. Did you see Yogi Ji's yoga? One of his legs was wobbling. You will see that after the elections, he will be completely shaken."

On the BJP's "Babri lock" allegation, Yadav said, "This is a dishonour of the Supreme Court's decision. The apex court should take suo motu cognizance of the matter and take action."

Alleging that the BJP wants to change the Constitution, he claimed that members of the Bahujan Samaj are now united and are voting against the BJP.

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

चुनाव का नतीजा 'मतगणना' से आएगा, 'मनगणना' से नहीं!

'मन की बात' चुनाव पर लागू नहीं होती, वहाँ 'जन की बात' चलती है और जब जागरुक जनता चौकन्नी होती है तो किसी की भी मनमानी नहीं चलती है।

Following

Akhilesh Yadav @yadavakhilesh

ऊपर से जुड़ा कोई तार नहीं, नीचे कोई आधार नहीं
अधर में जो है अटकी हुई वो तो कोई 'सरकार' नहीं

Akhilesh Yadav @yadavakhilesh

जनता की आवाज़ बन जब तस्वीर बोलती है
तब बड़े-बड़े 'शहंशाह' की हुकूमत डोलती है

2024 के चुनाव की आख़िरी रैली।

Translate post

है। इंडिया गठबधन किसान, मज़दूर, युवा, महिला, कारोबारी-व्यापारी, नौकरीपेशा और सरकारी कर्मचारियों व अधिकारियों के मुद्दों को आधार बनाकर, उनकी आवाज़ बनने का काम करता रहेगा।

देश की समझदार जनता का धन्यवाद, शुक्रिया और आभार।

#इंडिया_की_एकता_ज़िंदाबाद

Translate post

Akhilesh Yadav @yadavakhilesh

बहुत गहरा है कोई शिकवा औ' गिला
वो जो इतने करीब आकर भी न मिला

Akhilesh Yadav @yadavakhilesh

जनाकांक्षा का प्रतीक 'इंडिया गठबंधन' जनसेवा के अपने संकल्प पर अडिग रहेगा, एकजुट रहेगा और संविधान, लोकतंत्र , आरक्षण, मान-सम्मान-स्वाभिमान बचाने तथा बेरोज़गारी, महँगाई, भ्रष्टाचार के कष्ट और संकट से जनता को मुक्त करने के अपने प्रयासों को निरंतर रखेगा।

इंडिया गठबंधन PDA का राष्ट्र-व्यापी विस्तार करने और PDA के लिए लगातार संघर्ष करते रहने के लिए वचनबद्ध है। इंडिया गठबंधन किसान, मज़दूर, युवा, महिला, कारोबारी-व्यापारी, नौकरीपेशा और सरकारी कर्मचारियों व अधिकारियों के मुद्दों को आधार बनाकर, उनकी आवाज़ बनने का काम करता रहेगा।

देश की समझदार जनता का धन्यवाद, शुक्रिया और आभार।

Akhilesh Yadav @yadavakhilesh

'इंडिया गठबंधन' का गुलदस्ता!

Translate post

Akhilesh Yadav @yadavakhilesh

भाजपा शासन-प्रशासन कम-से-कम गंगा जी से तो झूठ न बोले... निंदनीय!

Translate post

गंगा में प्रदूषण : जांच रिपोर्ट न देने पर प्रयागराज के डीएम पर 20 हजार जुर्माना

कुंभ मेला-2025 के दौरान गंगा को पूरी तरह स्वच्छ बनाने के लिए एनजीटी ने दिया था आदेश

Akhilesh Yadav @yadavakhilesh

Remembering 'Kalaignar' M. Karunanidhi ji, the former Chief Minister of Tamil Nadu, on his birth anniversary. His legacy of service and leadership lives on.

Akhilesh Yadav @yadavakhil... · 06 Jun

अपनी है कोशिश यही
ज़मीन हो या आसमान
सब जगह हो मुस्कान!

Akhilesh Yadav @yadavakhilesh

वरिष्ठ सपा नेता, पूर्व मंत्री श्री विनय शाक्य जी का निधन, अत्यंत दुखद!

ईश्वर दिवंगत आत्मा को शांति एवं शोकाकुल परिजनों को दुख की इस घड़ी में संबल प्रदान करे।

विनम्र श्रद्धांजलि!

Translate post

पंजीकृत डाक पंजीकरण संख्या GPO/LW/NP-300/2024-2026 कुल पृष्ठ : 52 डिस्पैच तिथि : 15, 16, 17

समाजवादी पार्टी

/samajwadiparty
www.samajwadiparty.in

QR कोड स्कैन करें और वाट्स-एप चैनल से जुड़ें
/Akhilesh Yadav
/Samajwadi Party

जनता को प्रणाम, जनमत को सलाम!

उप्र की जागरूक जनता ने देश को एक बार फिर से नयी राह दिखायी है, नयी आस जगायी है।

ये संविधान, लोकतंत्र और आरक्षण बचाने की और सामाजिक न्याय सुनिश्चित करवाने की जीत है। उप्र की प्रगतिशील जनता के विचार ही वोट के रूप में हमें मिले हैं। ये बँटवारे की नकारात्मक राजनीति के ख़िलाफ़, सौहार्द-भाईचारे और सकारात्मक राजनीति की जीत है। ये INDIA गठबंधन और PDA की एकता की जीत है।

सबको हृदय से धन्यवाद, दिल से शुक्रिया!